हिन्दी आवृत्ति

चैतन्य लहरी

खण्ड - XII	मार्च-अप्रैल-2000	अंक 3 & 4

निर्विचार चेतना में कोई भी आपको छू नहीं सकता, यह आपका किला है। ध्यान धारणा द्वारा हमें निर्विचार चेतना स्थापित करनी चाहिए। इससे पता चलता है कि हम ऊँचे उठ रहे हैं। ध्यान करते हुए देखना चाहिए कि क्या आपको निर्विचार समाधि की अवस्था प्राप्त हुई? यह अवस्था आरम्भिक (Minimum of minimum) स्थिति है।

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

एकादश रुद्र पूजा 1984

श्री आदिशक्ति का आह्वान

हे परमेश्वरी माँ

अपने असीम प्रेम, करुणा एवं हितेच्छा के कारण,
दिव्य लोक से अवतरित हुई
आप भूलोक में।
ब्रह्माण्ड का सृजन करने वाली
अपार हैं
आपकी महान शक्तियाँ।
इतनी पूर्ण है आपकी पूर्णता
कि जिसका अस्तित्व है, था या होगा,
या रहेंगी सदा जो अस्तित्व में
निहित हैं वे सभी
आपके वर्णनातीत अस्तित्व में
इसके बावजूद भी
हे परमेश्वरी माँ,
करने के लिए अभिव्यक्ति अपने अगाध प्रेम की
पथ-प्रदर्शन हमारा करने के लिए
मानव रूप आपने धारण किया
सुरक्षा एवं मोक्ष हमें देने के लिए
सर्वशक्तिमान पूर्णातिपूर्ण
सभी कुछ स्वयं में समाहित किए
आप हैं
फिर भी हे प्रेममूर्ति माँ
अपने बच्चों के हित के लिए
श्री चरणों की पूजा करने का अधिकार
कृपा कर आपने उनको दिया
शुभ अवसर पर आपके 77वें जन्म पर्व के
नतमस्तक हो
विश्व भर के सभी सहजी बच्चे
आमन्त्रित करते हैं आपको,
दिल्ली शहर।
कृपा करें
आशीष वृष्टि करें
यहाँ पधार कर

नतमस्तक
आपके समस्त सहजी बच्चे।

इस अंक में

पृष्ठ नं.

1.	सम्पादकीय	3
2.	श्री गणेश पूजा कबैला (25.9.99)	4
3.	नवरात्रि पूजा कबैला (17.10.99)	14
4.	श्री आदिशक्ति की चौसठ शक्तियाँ	23
5.	श्री माताजी की कनाडा यात्रा (1999)	27
6.	उद्धारक स्वस्तिक	32
7.	श्री हनुमान पूजा प्रवचन-31 अगस्त 1990	36
8.	सहजयोग विश्व केन्द्र	42

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34,
फोन : 7184340

सम्पादकीय

गणपति पुले 1999

महान कवि रविन्द्र नाथ टैगोर ने दिव्य स्वप्न देखा था कि "भारत के तट पर सभी जातियों के लोग माँ का अभिषेक करने के लिए एकत्र होंगे। On the shores of Bharata, men of all races shall meet to anoint the "Mother"

गणपति पुले समुद्र तट पर एकत्र होकर सहजयोगी इस भविष्यवाणी को सत्य साबित करते हैं। नव सहस्राब्दि के उदय की पूर्व संध्या पर श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी के चरण कमलों का अभिषेक करने के लिए विश्वभर की भिन्न जातियों तथा रंगों के दस हजार से भी अधिक लोग गणपति पुले एकत्र हुए। परमेश्वरी माँ के चरण कमलों पर हृदय-पुष्प-पंखुड़ियाँ अर्पण करने के लिए सभी हृदय खुल गए। करुणामयी माँ ने सभी हृदय अपने प्रेम से सराबोर कर दिए और दस हजार पंखुड़ियाँ आदिशक्ति के एकमात्र प्रेम कमल के रूप में खिल उठीं। परमेश्वरी माँ से प्रसारित होने वाली गहन शान्ति सभी हृदयों की गहराई में प्रवेश कर गई और इन्हें शान्त कर दिया। इस दिव्य मौन में समुद्र की लहरों के संगीत के अतिरिक्त कुछ विशेष न रहा। मानो ये लहरें उछल कर श्री आदिशक्ति के चरण-कमलों को धोने के लिए उनके समीप आना चाह रही हों।

श्रद्धेय साम्राज्ञी के सम्मुख चुलबुले मस्तिष्क शान्त हो गए थे और उनके प्रेम की शक्ति का साम्राज्य चरम पर था। उनकी प्रेम लहरियाँ हमें उस अद्‌भुत तट पर बहाकर ले गई जहाँ हम भूल जाते हैं कि "हम क्या हैं? कहाँ से आए हैं? हमारे शरीर में क्या कष्ट हैं?"

हर रात्रि स्वर्गीय दावत थी। जिसमें हमने दिव्य संगीत की मदिरा का जी भर के पान किया और इनकी गुंजन का आनन्द लेने के लिए स्वप्नों में भी जागते रहे। हर सुबह, प्रेम के नए उपहार का वचन लेकर आई, ऐसा प्रेम जो हमें पहले कभी न मिला था, ऐसा प्रेम जिसकी कोई सीमा न थी, परन्तु जो हमारे लिए आनन्ददायी आश्चर्य ले कर आया। हम इतने आनन्द मग्न एवं आश्चर्य चकित थे। इससे पूर्व हम कहां सोए हुए थे? परन्तु एक बार स्वयं को पाकर कहीं पुनः हम स्वयं को खो न दें?

निःसन्देह हम उस अद्‌भुत तट से लौट आए हैं। परन्तु उनकी (श्री आदिशक्ति) मधुर सुगन्ध अब भी हमारे हृदयों में बनी हुई है। उन्हें हम अपने पूजा-स्थल पर, अपने स्वप्नों में, अपने हृदयों में, अबोध मुस्कान में, एक-दूसरे में देखते हैं।

हम जिधर भी देखें माँ ही माँ नजर आएं।

श्री गणेश पूजा

कबैला 25.9.99

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम यहाँ श्री गणेश की पूजा करने के लिए एकत्र हुए हैं। आप सब जानते हैं कि वे कितने शक्तिशाली देवता हैं। अबोधिता उनकी सभी शक्तियों का स्रोत है। नन्हें शिशुओं को जब हम देखते हैं तो स्वत: ही उनकी ओर खिंचे चले जाते हैं। उन्हें प्रेम करना चाहते हैं, चूमना चाहते हैं और उनके साथ रहना चाहते हैं। वे अत्यन्त अबोध होते हैं, अत्यन्त निष्पाप। श्री गणेश की पूजा करते हुए हमें देखना चाहिए कि क्या हम वास्तव में अबोध हैं या नहीं। आजकल लोग अत्यन्त चालाक हो गए हैं, चालाकी की कोई सीमा वो नहीं जानते। अबोध एवं सहज लोगों के साथ वे सभी प्रकार की चालाकी का खेल खेलते रहते हैं। सदैव स्वयं को न्यायोचित्त ठहरा सकते हैं कि जो भी कुछ वो कर रहे हैं इस आधुनिक युग में वह सब ठीक है क्योंकि आज सभी लोग चालाक हैं। **यह चालाकी आपको दाईं ओर के पतन की खाई तक ले जा सकती है। यह स्थिति अत्यन्त दण्डनीय है क्योंकि. इसके कारण लोगों को भिन्न प्रकार के शारीरिक रोग हो जाते हैं। उनके हाथों या पैरों को लकवा भी मार सकता है, उन्हें ज़िगर आदि के रोग भी हो सकते हैं। यह सब हो सकता है। उन्हें दण्डित करने के लिए एक मनोदैहिक प्रकार का रोग भी आ सकता है। ऐसी समस्याएं उत्पन्न होने की स्थिति में, जब लोग दाईं ओर के विकारों के कारण कष्ट उठाते हैं तब उन्हें श्री गणेश की पूजा करनी चाहिए।** उदाहरण के रूप में आजकल आप सब का जीवन अत्यन्त व्यस्त है। अपने कार्य में आप सब अत्यन्त व्यस्त हैं और आवश्यकता से अधिक कार्य करते हैं। आप समझते हैं कि आप परमात्मा का बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं। परिणामस्वरूप श्री गणेश उपेक्षित हो जाते हैं और ऐसा व्यक्ति या तो अत्यन्त शुष्क हो जाता है या अपने में अत्यन्त आसक्त। दो में से एक चीज अवश्य हो जाती है और व्यक्ति को पता भी नहीं चलता कि वह किस ओर जा रहा है। **सहजयोग में आपको मध्य में बनाए रखने के लिए एक ही चीज है-श्री गणेश की पूजा। श्री गणेश की पूजा से आप सदैव मध्य में रह सकते हैं तथा आपके दाईं ओर के सभी रोग भी श्री गणेश की पूजा से ठीक हो सकते हैं।**

लोग श्री गणेश की पूजा भिन्न विधियों से करते हैं, परन्तु उन्हें स्मरण करने का एक सुगम तरीका ये है कि उनके (श्री माताजी के) फोटोग्राफ के सम्मुख बैठकर उनसे चैतन्य लहरियाँ प्राप्त करें। स्वयं को सन्तुलित करने की यह सर्वोत्तम विधि है। आपके जीवन में बहुत सी चिन्ताएं और संघर्ष हैं। श्री गणेश इन सब चिन्ताओं और संघर्षों को निष्प्रभावित कर सकते हैं। अबोध होते हुए भी वे अत्यन्त चतुर हैं और जब वे आपके पास आते हैं तो आप आश्चर्यचकित हो जाते हैं कि किस प्रकार वे कार्य करते हैं और किस प्रकार आपकी सभी चिन्ताओं तथा बाधाओं को दूर करते हैं। तो सीधे होते हुए भी हमारे लिए ये महत्वपूर्णतम देवता हैं।

मूलाधार चक्र बहुत ही जटिल है, सभी चक्रों में से जटिलतम, क्योंकि मैं सोचती हूँ, इसमें बहुत से मार्ग हैं और बहुत से कक्ष जो, हम कह सकते हैं, हर समय चैतन्य लहरियाँ छोड़ते हैं और शान्त करते रहते हैं। अतः स्थिर होने के लिए आपको चाहिए कि पूर्णतः श्री गणेश के प्रति समर्पित हो जाएं।

जैसा मैंने बताया श्री गणेश ईसा मसीह के रूप में अवतरित हुए। वे अत्यन्त अबोध व्यक्ति थे। यदि वे अबोध न होते तो उन्हें सूली पर न लटकाया जा पाता। परन्तु दूसरों की चालाकियाँ देख पाने की चुस्ती उनमें न थी। उनके अपने शिष्यों ने उन्हें धोखा दिया। धोखा देने वालों को वो जानते थे फिर भी उन्होंने उनका नाम नहीं लिया। आप यदि उनके जीवन पर दृष्टि डालें तो आप जान जाएंगे कि यह पावन सौन्दर्य से परिपूर्ण है। वे इतने पावन हृदय व्यक्ति थे, उनका व्यक्तित्व इतना सुन्दर था कि जहाँ भी उन्हें कोई बुराई दिखाई दी वे उससे लड़ने के लिए खड़े हो गए। श्री गणेश भी ऐसे ही हैं।

श्री गणेश के आशीर्वाद हम सब लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि हमारे चोट खाने की या संकट रोग आदि में फँसने की संभावनाए बहुत अधिक हैं। वे संकट-विमोचन कहलाते हैं, अर्थात् जीवन की बाधाओं को दूर करने वाले। आपमें से बहुत से लोगों ने अनुभव किया होगा कि किस प्रकार भिन्न कष्टों और बाधाओं में तथा अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में वे आपके सहायक बने। वे गणपति हैं अर्थात् गणों के स्वामी और कार्यों को भली-भांति करना उनकी शैली है।

जैसा मैंने आपको बताया, ये गण हमारे अन्दर रोग प्रतिकारकों के रूप में स्थापित हैं। किसी भी संकट की स्थिति में यह छोटे-छोटे रोग प्रतिकारक सूचना देते हैं। वे मस्तिष्क को संकट की सूचना देते हैं। उरोस्थि (Sternum Bone) के नीचे श्री दुर्गा का निवास या सिंहासन है। तो जब भी कोई समस्या होती है या हम किसी कष्ट में फँस जाते हैं तब उरोस्थि में प्रदोलन (Viberation) होने लगता है और गणों के रूप में इन रोग प्रतिकारकों को सूचना मिल जाती है। चिकित्सा विज्ञान ने इन गणों को रोग प्रतिकारक (Anti bodies) नाम दिया है। तब ये गण आक्रमण करते हैं। ये निशाना भी लगा सकते हैं। ये जानते हैं कि कष्टों पर निशाना लगाकर इन पर आक्रमण किस प्रकार किया जाए। व्यक्ति सोचता है कि ये गण केवल शारीरिक रोग की स्थिति में ही सहायक होते हैं परन्तु मानसिक रूप से अशान्त तथा मानसिक रोगियों की भी ये गण सहायता करते हैं।

अपनी समस्याओं का समाधान करने में ये गण इतने कुशल हैं कि कभी-कभी तो हमें आश्चर्य होता है कि किस प्रकार चीज़ें कार्यान्वित हो रही हैं! उदाहरण के रूप में, मान लो कुछ घटित होता है। किसी व्यक्ति को, किसी बच्चे को। बच्चे के माता-पिता रोना शुरू कर देते हैं; माँ को पुकारते हैं; और माँ, जो कि दुर्गा हैं, तब चमत्कारिक रूप से बच्चा ठीक हो जाता है। वे कहते हैं कि चमत्कार हो गया। आपके जीवन में भी ऐसे बहुत से चमत्कार हुए होंगे, इनका वर्णन आप नहीं कर सकते। परन्तु ये सब श्री गणपति के गणों के कारण है। ये गण भी उन्हीं की तरह से नन्हें हैं परन्तु वो बहुत ही चुस्त एवं गतिशील हैं। ये कभी सोते नहीं। जब भी कभी कोई संकट आता है तो ये गण जाकर समस्या पर आक्रमण करते हैं और उसका समाधान खोजते हैं। यह बात अविश्वसनीय है कि किस प्रकार

वे कार्य करते हैं और किस प्रकार सूचना पहुँचाते हैं। इस प्रकार की घटनाओं के मैं आपको बहुत से उदाहरण दे सकती हूँ। उदाहरण के रूप में, हमारे एक आश्रम में, अमरीका में एक बच्चा तरणताल में डूब गया था, सभी लोग तरणताल में कूद रहे थे। मुझे तरणताल का विचार कभी भी अच्छा नहीं लगा क्योंकि तरणताल में बच्चे गिर सकते हैं। तो एक बच्चा इस तरणताल में गिर गया और 15 से 20 मिनट तक पानी के अन्दर रहा। कोई न जानता था कि वह कहाँ है। तब उन लोगों ने उसे ढूंढने का प्रयत्न किया और उसे पानी में पड़ा हुआ पाया। वे सब घबरा गए और प्रार्थना करने लगे कि श्रीमाताजी कृपा करके इस बच्चे को बचा लीजिए। हैरानी की बात है, मैं कभी किसी आश्रम में टेलिफोन नहीं करती, वहाँ के पते भी मैं नहीं जानती। परन्तु उस दिन मैंने एक नम्बर पर टेलिफोन करने के लिए कहा। मैं किसी के नम्बर भी नहीं जानती। जब मैंने टेलिफोन किया तो एक अगुआ (Leader) आया, मैंने उसे बताया कि मैं जानती हूँ कि बच्चा पानी में गिर गया है। परन्तु वह बच जाएगा। किसी ने मुझे उसके विषय में कुछ न बताया था। आप चिन्ता न करें, वह बच्चा पूरी तरह से ठीक हो जाएगा। तब वे बच्चे को लेकर आए। बच्चे का इलाज डॉक्टर ने भी किया, परन्तु वास्तव में चैतन्य लहरियों से उसका इलाज हुआ और आज वह बच्चा पूरी तरह से ठीक है, जबकि डॉक्टर ने कहा था कि यह बच्चा बचेगा नहीं और यदि बच भी गया तो वह मृतपाय होगा, सदैव बेहोशी (Coma) की स्थिति में। इस बार जब मैं अमरीका गई तो इस बच्चे से मिली। तो इस प्रकार की बहुत सी घटनाएं होती हैं और लोग मुझे बताते हैं, "श्री माताजी ये आपकी कृपा है, आपके आशीर्वाद से ही यह सब घटित हुआ है।"

कुछ सीमा तक मैं कहना चाहूँगी कि ऐसा होता है, परन्तु यह सब श्री गणेश के कारण है।

श्री गणेश का एक अन्य गुण यह है कि वे माँ के प्रति आज्ञाकारी हैं। यहाँ तक कि वे शिव को भी नहीं पहचानते, विष्णु या किसी अन्य को भी नहीं। उनके लिए उनकी माँ ही सभी कुछ है। माँ के लिए वे अपने पिता शिव से भी युद्ध कर सकते हैं, किसी से भी लड़ सकते हैं क्योंकि उनके लिए माँ के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता, पूर्ण चुस्ती ही महत्वपूर्ण है। तुरन्त वे जान जाते हैं कि माँ की इच्छा क्या है और उसे कार्यान्वित करते हैं। अन्यथा उनकी शैली अत्यन्त निष्कपट है, सहज है और बाल-सुलभ है। परन्तु उनके कार्य बहुत बड़े-बड़े हैं। ये गण भी बहुत महत्वपूर्ण लोग हैं, बहुत ही अबोध हैं फिर भी जब उन्हें किसी कार्य को करने, किसी समस्या को सुलझाने, के लिए कहा जाए तो वे बहुत चुस्त हैं। बहुत ही तीव्रता से वे कार्य करते हैं।

एक अन्य गुण जो श्री गणेश में है वो ये कि वे चरित्रवान लोगों का सम्मान करते हैं-जिनके जीवन में पावित्र्य ही मुख्य चीज है। पावित्र्य का वे बहुत सम्मान करते हैं। केवल महिलाओं में ही नहीं, पुरुषों में भी। वे चाहते हैं कि पावित्र्य सदैव बना रहे। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् आपको भी पूर्णत: पवित्र हो जाना चाहिए। आपकी आँखें उल्टे सीधे ढंग से युवा महिलाओं को या युवा पुरुषों को फुसलाने में नहीं लगी रहनी चाहिए ताकि आपका पावित्र्य न बिगड़े। **आपकी दृष्टि भी पवित्र होनी चाहिए, आपके विचार भी पवित्र होने चाहिए। इसके लिए**

आपको चाहिए कि आप अन्तर्दर्शन करें और स्वयं अपनी गलतियों को देखें कि आपने क्या गलतियाँ की हैं और किस प्रकार का अनैतिक व्यवहार किया है। आपको स्वयं को ठीक करना होगा और श्री गणेश से क्षमा माँगनी होगी। आप यदि क्षमा मांगेंगे तो वो किसी भी अपराध के लिए क्षमा दे सकते हैं। वे इतने अबोध हैं इतने सुन्दर हैं कि वे आपको क्षमा कर देते हैं। परन्तु ऐसा करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। हमारी सारी नैतिकता का आधार पावित्र्य है। हमें अत्यन्त पवित्र होना चाहिए। बहुत से धर्म आए और उन्होंने पावित्र्य की बात की, परन्तु अब ये धर्म बेकार हो गए हैं। उनका कोई आधार नहीं रहा। धर्म के विषय में जो कुछ भी शास्त्रों में लिखा गया है ये उसे कार्यान्वित नहीं करते। सभी प्रकार के उल्टे सीधे कार्य ये करते हैं और फिर स्वयं को हिन्दू, मुसलमान, इसाई और सभी प्रकार के धर्म कहते हैं। वास्तव में धर्म पूरी तरह से असफल हो गए हैं और यही कारण है कि श्री गणेश उनके पीछे पड़ गए हैं।

एक अन्य खूबी श्री गणेश की यह है कि उनका सृजन पृथ्वी माँ से हुआ है। वे पूर्णतः पृथ्वी माँ द्वारा बनाए गए हैं। इसलिए वे किसी भी देश के उन लोगों को पसन्द नहीं करते जो काला जादू करते हैं या जो रूढ़िवाद को बढ़ावा दे रहे हैं, या उन लोगों को जो चरित्रहीन हैं। ऐसे लोगों के लिए वो समस्याएं खड़ी करते हैं। तब क्या होता है? श्री गणेश पृथ्वी माँ को कहते हैं कि भूचाल लाओ। जिन स्थानों पर पावित्र्य का सम्मान नहीं होता वहां भूचाल आते हैं तथा ऐसे स्थानों पर भी जहाँ लोग रूढ़िवादी हैं या जहाँ लोग काले जादू की पूजा करते हैं। माँ के माध्यम से श्री गणेश ऐसे लोगों पर आक्रमण करते हैं। तो पृथ्वी माँ में भी समझने की शक्ति है। हाल ही में बहुत से भूचाल आए। आप जानते ही हैं, तुर्की में, ताइवान में। परन्तु एक भी सहजयोगी इन भूचालों में नहीं मरा। श्री गणेश उनकी रक्षा करते हैं। उनमें विवेक बुद्धि है जिससे वे केवल ऐसे लोगों को नष्ट करते हैं जो चरित्रहीन हैं। चरित्रहीन बहुत से लोगों को उन्होंने नष्ट कर दिया है। उनमें पृथ्वी माँ की शक्ति भी है। पृथ्वी माँ की तरह से वो भी चुम्बकीय हैं और लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। जिस प्रकार बच्चों के प्रति लोग आकर्षित होते हैं उसी प्रकार सुगमता से श्री गणेश की ओर भी आकर्षित हो जाते हैं। तो यह चुम्बकीय शक्ति उनके अन्दर मौजूद है।

आप हैरान होंगे कि यह चुम्बक पक्षियों में भी होता है। कुछ पशुओं में भी होता है, परन्तु पक्षियों में ये विशेष रूप से विद्यमान है और यही कारण है कि वे वांछित दिशा में जा सकते हैं। पक्षी साइबेरिया से उड़कर आस्ट्रेलिया तक चले जाते हैं। किस प्रकार वे ऐसा कर पाते हैं? पुनः वे उसी स्थान पर वापिस आ जाते हैं। मछलियों में भी यह गुण होता है। पहाड़ों से आने वाले जल में मछलियां मिलती हैं; कुछ समय के लिए वे मैदानों पर आ जाती हैं फिर परमात्मा जाने किस प्रकार वे अपने स्थान पर वापिस पहुँच जाती हैं! ऐसा तभी सम्भव होता है जब दिशा का ज्ञान हो। पक्षियों में दिशा ज्ञान होता है, वे दिशा को जानते हैं और अपने गुणों के अनुसार चलते है। उदाहरण के रूप में एक साँप, साँप ही रहेगा और कुत्ता, कुत्ता और शेर, शेर ही रहेगा। परन्तु मनुष्य के अन्दर सम्भवतः सारे ही पशु विद्यमान हैं। मनुष्य कोई भी रूप धारण कर सकता है, उसके विषय में आप कुछ नहीं कह सकते। वह इतना चालाक है कि

स्वीकार भी नहीं करता कि वह पशु रूप धारण करता है। परन्तु जब वह इस प्रकार का कोई रूप धारण करता है तो आप हैरान हो जाते हैं कि मानव होते हुए भी इतने निम्न स्तर पर वह कैसे जा सकता है। इसका कारण ये है कि उन्होंने जीवन में श्री गणेश का सम्मान नहीं किया। इसलिए वे किसी भी निम्न स्तर पर या किसी भी स्थान पर जा सकते हैं।

एक अन्य उदाहरण मैं आपको देती हूँ। भारत में लातूर में एक भयंकर भूचाल आया। लातूर में श्री गणेश उत्सव का यह चौदहवां दिन था। श्री गणेश की प्रतिमाओं को ले जाकर उन्हें समुद्र या नदी के जल में विसर्जित करना था। लातूर के लोगों ने श्री गणेश की बहुत सुन्दर प्रतिमा बनाई थी जिसके सम्मुख वे नाचते गाते थे। परन्तु आजकल वे इस प्रतिमा के सम्मुख गन्दे-गन्दे फिल्मी गाने और संगीत बजाने लगे थे। ये संगीत और नृत्य इतना गन्दा था कि इसे सहन नहीं किया जा सकता। इसके कारण श्री गणेश रुष्ट हो गए। प्रतिमा को जल में विसर्जित करके जब वे घर वापिस लौटे तो शराब में धुत्त होकर नाचने लगे और जय गणेश, जय गणेश का उच्चारण करने लगे। उस समय पृथ्वी डोल गई, भूचाल आया और पृथ्वी माँ ने उन सबको अपने अन्दर निगल लिया। वे सब पृथ्वी में ही दफन हो गए। नशे में धुत्त सभी वयस्कों को पृथ्वी माँ ने लील (खा) लिया। वहाँ पर हमारा एक आश्रम भी है, एक प्रकार का ध्यान केन्द्र, जिसके चहुँ ओर अत्यन्त सुन्दर भूमि है। परन्तु भूचाल ने आश्रम के आस-पास की काफी दूर तक की भूमि को नहीं छुआ। इस भूमि से आगे एक बहुत बड़ी दरार आई, केन्द्र के इर्द-गिर्द भूमि फट गई परन्तु किसी को कोई हानि न पहुँची। वे सभी ठीक-ठाक थे। भूचाल ने हमारे आश्रम को छुआ तक नहीं। एक भी सहजयोगी को हानि नहीं पहुँची। श्री गणेश और उनके गणों द्वारा इस प्रकार की सुरक्षा प्रदान करना वास्तव में प्रशंसनीय है। अत: हमें उनके गणों का सम्मान करना चाहिए। अत्यन्त महत्वपूर्ण बात ये देखना है कि वे हमारे अन्दर चहुँ ओर विद्यमान हैं और गतिशील हैं। वे हमें देखते हैं कि हम किस प्रकार के व्यक्ति हैं और यदि अपने कदाचरण द्वारा हम श्री गणेश को अपने अन्दर से निष्कासित करने का प्रयत्न करें तो ये गण हमें हमारी सामान्य स्थिति में लाने का प्रयत्न करते हैं। **कई बार ये आपको अवसर प्रदान करते हैं, परन्तु फिर भी यदि आप अपनी चालाकियों और अहम् में फँसे रहते हैं तब श्री गणेश कठोरतापूर्वक दण्ड देते हैं।** आप लोगों के लिए ऐसी स्थिति भयानक विपत्ति बन जाती है। अत: सदैव श्री गणेश की पूजा करें। **परन्तु मैं सदा कहती हूँ कि इन शिल्पकारों द्वारा बनाई गई सभी श्री गणेश की प्रतिमाओं की पूजा न करें क्योंकि परमात्मा जानता है कि वो कैसे शिल्पकार हैं। पैसा कमाने के लिए श्री गणेश की प्रतिमा बना रहे हैं और उनमें पावित्र्य भाव का पूर्ण अभाव भी हो सकता है। ऐसे लोग श्री गणेश की प्रतिमा बनाते हैं जिसकी आप पूजा करते हैं। ऐसी पूजा से हमें कोई लाभ नहीं होता।** मोहम्मद साहब ने कहा है कि किसी भी मूर्ति की पूजा मत करो क्योंकि ये मूर्तियाँ उन लोगों द्वारा बनाई जाती हैं जो इसके अधिकारी नहीं हैं। ये प्रतिमाएं स्वयंभू नहीं हैं। पृथ्वी माँ ने इनका सृजन नहीं किया। इन्हें ऐसे लोगों ने बनाया है जिनका लक्ष्य मात्र धन कमाना है। अत: **दुकानों से खरीदी गई किसी भी प्रतिमा की पूजा नहीं की जानी चाहिए, चाहे वो जितनी भी अच्छी हो।** जो

चीज विद्यमान ही नहीं है उसकी हमें पूजा नहीं करनी चाहिए। ये मूर्तियाँ उन लोगों ने बनाई हैं जिनकी चैतन्य लहरियाँ बहुत खराब हैं, जो धोखेबाज हैं, बहुत चालाक हैं और स्वयं को बहुत कुछ समझते हैं। ऐसे व्यक्ति द्वारा बनाया गया श्री गणेश यदि आप खरीदते हैं तो इससे आपको हानि होगी, लाभ नहीं। ऐसी मूर्ति आप घर को सजाने के लिए ले सकते हैं पूजा के लिए नहीं। श्री गणेश का वास्तव में कोई चित्र उपलब्ध नहीं है। पृथ्वी माँ में से आठ श्री गणेश प्रकट हुए हैं। मैंने उन्हें देखा है। परन्तु उन स्थानों के पुजारी अत्यन्त दुष्ट लोग हैं। मैं एक पुजारी से मिली थी वह कहने लगा, "मुझे दमा हो रहा है, पक्षाघात है, ऐसा कैसे हो सकता है? मैं श्री गणेश की पूजा कर रहा हूँ, मेरे पुरखों ने भी श्री गणेश की पूजा की, फिर भी ऐसा क्यों हो रहा है? मैंने कहा आप स्वयं अन्तर्दर्शन करके देखो कि आप कैसा जीवन बिता रहे हैं, क्या-क्या कारनामे करते हैं? क्या आप वास्तव में श्री गणेश के पुजारी बनने योग्य हैं? तब उन्हें ये बात महसूस हुई। मैंनें कहा, "अब तो मैं तुम्हें ठीक कर दूंगी परन्तु इसके पश्चात् तुम्हें पवित्र व्यक्ति बनना होगा, पवित्र जीवन बिताने का प्रयत्न करो, छल और चतुराई से दूसरे लोगों पर सवार रहने वाले व्यक्ति का नहीं।

जो दण्ड श्री गणेश देते हैं उन्हें मैं गिन नहीं सकती। कितनी बाधाएं वे खड़ी कर सकते हैं मैं नहीं बता सकती। वे आपको बहुत कष्ट दे सकते हैं, मौत के मुँह तक ले जा सकते हैं। वे इतने शक्तिशाली हैं, इतने अधिक शक्तिशाली हैं क्योंकि उनकी सारी शक्ति उनकी माँ के दिव्य कार्य के लिए है-उनकी सारी शक्ति। वे न तो कुछ करते हैं और न कुछ चाहते हैं। साधारण से बने मोदक उन्हें पसन्द हैं, यही उनका भोजन है। उनका शरीर इतना सूक्ष्म और शक्तिशाली है कि वे पर्वतों को चकनाचूर कर सकते हैं। अपनी सहजता, माधुर्य और अबोधिता से वे वास्तव में लोगों को परिवर्तित कर सकते हैं, कठोर से कठोर व्यक्ति भी परिवर्तित हो सकता है। दाईं दिशा में चलने वाला स्वस्तिक उनका प्रतीक है। परन्तु स्वस्तिक यदि उल्टी दिशा का होगा तो यह विनाशकारी हो सकता है। हिटलर ने जब आरम्भ में स्वस्तिक का प्रयोग किया था तो यह सही दिशा का था और वह विजयी हुआ। परन्तु बाद में स्वस्तिक के स्टेन्सिल को उलट कर लगा दिया गया और यह बाईं दिशा का हो गया। युद्ध के परिणाम भी उलट गए और उसकी सेनाएं नष्ट हो गईं। इससे आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि श्री गणेश का स्वस्तिक कितना शक्तिशाली है! अब हमने ये भी साबित कर दिया है कि कार्बन को यदि हम बाएं से दाएं को देखें तो ओंकार नज़र आता है और दाएं से बाएं को देखने पर स्वस्तिक। नीचे से ऊपर को यदि देखें तो यह क्रॉस जैसा प्रतीत होता है। यह पूरा चक्र ही कार्बन के अणुओं से बना है। इससे यह साबित होता है कि श्री गणेश ही ईसा मसीह के रूप में अवतरित हुए हैं। पूरे विश्व में उन्हीं की पूजा होती है। देवी महात्म्य में इसका वर्णन है। आप यदि इसे पढ़ें तो स्पष्ट रूप से इसमें लिखा है कि किस प्रकार उन्होंने अण्ड रूप धारण किया और आधे अण्डे ने ईसा मसीह का रूप धारण किया और आधे अण्डे ने श्री गणेश का।

ये सभी चीजें हैं परन्तु भ्रमित होने के कारण हम इन्हें समझ नहीं सकते। हम उचित रूप से देखना नहीं चाहते कि यह सब पहले से ही लिखा जा चुका है। अतः जो लोग ईसामसीह की पूजा करते हैं वे श्री गणेश की भी पूजा

करते हैं और जो भी प्रार्थना आप ईसा मसीह से करते हैं वह आप श्री गणेश से कह रहे हैं। वे दो नहीं हैं। वे पूर्णतः अभिन्न हैं और एक हैं। जो भी बातें मैंने आपको ईसा मसीह के विषय में बताई हैं आप इन्हें खोजने का प्रयत्न करें और आप इन्हें साबित कर देंगे। जैसे ईसा मसीह ने ये पहली दो उंगलियाँ उठाई। इसका अर्थ है कि एक उंगली विशुद्धि की है, श्री कृष्ण की, और दूसरी श्री विष्णु की अर्थात् वे उनके पिता हैं यानि कि विष्णु या श्रीकृष्ण ईसामसीह के पिता थे। यह बात स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। उन्होंने दूसरी उंगलियाँ क्यों नहीं उठाई? यही दो उंगलियां क्यों उठाई? इनके माध्यम से वे अपने पिता की ओर इशारा कर रहे थे-श्री विष्णु या श्री कृष्ण की ओर। श्री गणेश की चैतन्य लहरियाँ यदि आप देखें तो मेरी कही हुई बात को समझना अत्यन्त सुगम हो जाएगा। आप यदि उनकी चैतन्य लहरियाँ देखें और उनके विषय में सोचें तो आप हैरान होंगे। आप हैरान होंगे कि आपका अगन्य चक्र खुल गया है और आप निर्विचार हो गए हैं क्योंकि वे ही ईसा मसीह हैं जो अगन्य चक्र पर विराजमान हैं। तो यह चक्र खुल जाता है और आज्ञा चक्र के पकड़े होने के सभी मूर्खतापूर्ण विचार समाप्त हो जाते हैं। श्री गणेश का नाम लेकर आप स्वयं अपने अगन्य चक्र को खोल सकते हैं। अगन्य चक्रसे आने वाली चालाकियाँ पूर्णतः समाप्त हो जाती हैं। अब वे चालाकियाँ नहीं रह जाती, अपने मस्तक पर जब आप इस अबोधिता को देखते हैं तो आप आश्चर्यचकित रह जाते हैं ओर ये सब विचार लुप्त हो जाते हैं। दूसरों को हानि पहुँचाने वाली चालाकी से भरी कोई भी बात अब आप सोच नहीं सकते। अगन्य चक्र जब पूरी तरह से खुल जाता है तो आप पूर्णतः परिवर्तित हो जाते हैं। हम सब के लिए ये बहुत बड़ा वरदान है कि हमारा मूलाधार चक्र ठीक प्रकार से स्थापित कर दिया गया है। पृथ्वी पर जब हम बैठते हैं तो इससे हमें और भी अधिक लाभ होता है क्योंकि यही पृथ्वी श्री गणेश की माँ है इसलिए आपको भी पृथ्वी माँ की देखभाल करनी चाहिए। हम पृथ्वी माँ की देखभाल नहीं करते और न ही पृथ्वी माँ का मूल्य समझते हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रातः काल जब आप उठते हैं तो सर्वप्रथम पृथ्वी माँ को नमस्कार करते हैं। ये कहना कि हे पृथ्वी माँ मैं आपके सामने नतमस्तक हूँ, आपको प्रणाम करता हूँ। क्योंकि मैं आपको अपने पैरों से छुऊंगा। पृथ्वी माँ के प्रति इतना सम्मान जब आपमें होगा तो आप इसका दुरुपयोग नहीं करेंगे। आपके सम्मुख आज की पर्यावरण सम्बन्धी तथा अन्य समस्याएं न होंगी। अपनी अज्ञानता के कारण हम यह नहीं समझ पाते कि पृथ्वी माँ ही श्री गणेश की माँ हैं जिनका चक्र मूलाधार है। इस बात को जब आप समझ जाएंगे तो ये भी जान जाएंगे कि आपको क्या करना है? हमें पृथ्वी माँ की देखभाल करनी है। पृथ्वी माँ को गरिमा देनी है। उसे सुन्दर बनाना है। हम ये सभी प्रकार के कार्य कर सकते हैं परन्तु जिस प्रकार से हम पृथ्वी माँ का दुरुपयोग कर रहे हैं यह अत्यन्त गलत कार्य है। पर्यावरण की समस्याओं के कारण यह हमें हानि पहुँचा रहा है। पृथ्वी माँ पर उपजाए गए पेड़ों को तथा अन्य सभी वस्तुओं को काट डालना, केवल पैसा कमाने के लिए ही इनका उपयोग करना अत्यन्त गलत बात है। इसके विषय में व्यक्ति को सोचना चाहिए और जब भी कभी आप एक पेड़ काटें तो इसके स्थान पर एक अन्य पेड़ लगाएं। पेड़ पृथ्वी माँ का सौन्दर्य है, सारी हरियाली, सारी चीज़ें पृथ्वी माँ का सौन्दर्य है। कुछ लोगों

को बागवानी तथा प्रकृति की अन्य चीज़ों से कोई दिलचस्पी नहीं होती। मैं नहीं समझ पाती कि वे किस प्रकार जीवित रहते हैं। परन्तु बागवानी या प्रकृति के सौन्दर्य में कोई दिलचस्पी रखे बिना भी वे जीवित रहते हैं। प्रकृति इतनी सुन्दर है, प्रकृति को देखें तो सही। इसमें से कभी दुर्गन्ध नहीं आती, यह कभी गन्दी नहीं होती। हर पत्ता इतने सुन्दर ढंग से आयोजित है कि इसे सूर्य की किरणें प्राप्त होती हैं। इस विषय में कोई झगड़ा नहीं है। पेड़, पत्ते सभी कुछ इतने अच्छे ढंग से आयोजित हैं, सभी कुछ इतना सुन्दर है। पशु भी इन्हें नष्ट नहीं करते। आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे, पशु भी हरियाली को उजाड़ते नहीं, ज्यादा से ज्यादा वे कुछ घास खा लेंगे या कुछ और। परन्तु प्राय: पशु पेड़ों को नष्ट नहीं करते। वे किसी भी चीज़ को नष्ट नहीं करते जैसे हम अपने स्वार्थ के लिए पृथ्वी माँ को नष्ट करते हैं। इसके लिए चाहे जो कारण हो, परन्तु हमें समझना है कि हमें पृथ्वी माँ का सम्मान करना है।

पृथ्वी माँ श्री गणेश की माँ हैं। जिन्हें आप कह सकते हैं कि **वे हमारे सबसे बड़े सहजयोगी हैं। उन्हें कभी योग अपनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। वो तो सदैव योग में होते हैं।** वे हमारे महानतम योगी हैं। हर समय वे सभी अच्छे कार्य करते हैं। वे कोई भी गलत कार्य नहीं करते, कभी भी। उनमें देवताओं का महानतम पद प्राप्त करने की योग्यता है। मैं तो कहूँगी कि वे हमारे महानतम देव हैं और हमें वास्तव में उनकी पूजा करनी चाहिए। उनके माध्यम से सभी देवताओं की पूजा हो जाती है और वे प्रसन्न होकर आशीर्वाद देने लगते हैं। आज मैं सोच रही थी कि, आजकल इस आधुनिक समय में हम किस प्रकार इतने निर्लज्ज हो गए हैं! मिथ्या-अभिमान के लिए किस प्रकार अपने पावित्र्य को बिगाड़ने का प्रयत्न किया है। किसी का सम्मान यदि आपने करना होता तो आप पवित्रता बनाए रखते। परन्तु आप तो स्वयं को अपमानित कर रहे हैं और सोचते हैं कि पाप करके आप अत्यन्त चुस्त और आधुनिक बन रहे हैं। आज, इस आधुनिक समय में, जो कुछ भी पाप के कार्य हो रहे हैं ये पूरी तरह से गलत हैं और हमें चाहिए कि हम इसकी निन्दा करें। आपको इसके समीप भी नहीं जाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से श्री गणेश कुपित हो जाते हैं। अपना महत्वपूर्ण आधार समझने के लिए शालीनता बहुत महत्वपूर्ण है और ये आधार है हमारा पावित्र्य। आप जानते ही हैं कि भारत में अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए बत्तीस हजार महिलाओं ने आत्मदाह कर लिया। मैं भी उसी परिवार से संबंधित हूँ। आप कल्पना कर सकते हैं कि अपने पावित्र्य में उनका कितना विश्वास होगा और उमें कितना साहस होगा! हमारा सतीत्व यदि समाप्त हो जाए तो हमारे जीवन का क्या लाभ है? अपने सतीत्व की रक्षा के लिए इतना बड़ा बलिदान करके उन्होंने ये बताया है कि पावित्र्य ही महत्वपूर्णतम चीज़ है जो हमारे अन्दर होनी चाहिए। ये पावित्र्य महिलाओं में ही नहीं, पुरुषों में भी होना चाहिए। पुरुषों के लिए यह और भी अधिक आवश्यक है। पुरुषों के लिए श्री गणेश बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यदि वे श्री गणेश का सम्मान नहीं करते तो उन्हें बहुत से रोग हो सकते हैं। यदि हम श्री गणेश की देखभाल करते हैं तो हमारा स्वास्थ्य बहुत अच्छा होगा क्योंकि वे हर समय हमारे शरीर को संभालते हैं, हर समय वे हमारी देखभाल करते हैं, हमारी रक्षा करते हैं। यही श्री गणेश मूलाधार में हैं और वही कुण्डलिनी की देखभाल करते

हैं। कुण्डलिनी की रक्षा करते हैं और यदि हमें कुछ हो जाए तो कुण्डलिनी उठती है। परन्तु उसको सहारा देने वाले, उसे उठाने वाले, जागृत करने वाले और उन्हें उत्थान की स्थिति में बनाए रखने वाले श्री गणेश हैं। श्री गणेश ही यह सब कार्य कार्यान्वित करते हैं। वे ही हमारी कुण्डलिनी की रक्षा करते हैं और इस प्रकार वे ही हमारे आत्मसाक्षात्कार के आधार हैं। तो श्री गणेश कितने महत्वपूर्ण हैं ये आपको जानना चाहिए। आपको अपने अन्दर झांककर अन्तर्दर्शन द्वारा देखना चाहिए कि वास्तव में हम श्री गणेश के प्रति कितने समर्पित हैं। यदि हम समर्पित हैं तो हम इसके लिए क्या कर रहे हैं? ऐसा करने से आप सभी गन्दी चीज़ों से घृणा करने लगेंगे। ये सब आपको अच्छा न लगेगा, ऐसे लोग भी आपको अच्छे नहीं लगेंगे। सहजयोगी इस प्रकार से इसे कार्यान्वित करता है। इस मामले में बच्चे सर्वोत्तम होते हैं। वे अत्यन्त मधुर और सुहृदय होते हैं, प्रेममय और सुन्दर होते हैं, श्री गणेश की तरह। श्री गणेश वास्तव में अबोध हैं परन्तु अत्यन्त रक्षाकारी। अपनी अबोधिता से वे आपकी रक्षा करते हैं? अतः हमें अपनी अबोधिता की कामना करनी चाहिए और कभी व्यथित नहीं होना चाहिए क्योंकि कभी-कभी ऐसे लोगों को धोखा दिया जाता है, उन पर रौब जमाया जाता है। सभी कुछ होता है परन्तु कोई बात नहीं। अबोध लोगों पर रौब जमाने वाले सभी लोग कष्टों में फँस जाएंगे। विश्व भर में इस बात का शोर है, लोग इसके विषय में बातें कर रहे हैं कि अबोध और सहज लोगों पर किसी प्रकार का दबाव नहीं होना चाहिए। ये सब चीज़ें घटित हुई हैं परन्तु इन्हें परिवर्तित होना होगा, इन्हें एक अन्त तक पहुँचना होगा। इसके बिना लोग जीवित नहीं रह सकते। जैसे अमरीका में ये लोग सभी जगह गए और बहुत से लोगों को प्रताड़ित किया। ये देखकर मैं हैरान थी कि वहाँ पर बहुत से लाल भारतीय हैं जिन्हें भारतीय अमरीकन कहा जाता है। उन्हें इतने कष्ट दिए गए कि उन्हें भागकर भिन्न स्थानों पर जाना पड़ा। मैं काना जोहरी गई। मुझे लगा कि चैतन्य लहरियाँ बहुत अच्छी थीं। अर्थात् वहाँ के लोग अत्यन्त अबोध और सहज थे। परन्तु जो अमरीकन उस समय वहाँ पहुँचे उन्होंने इन लोगों को पूरी तरह से समाप्त कर देना चाहा। भागकर ये लोग काना जोहरी जैसे स्थानों पर छिप गए। परन्तु काना जोहरी की चैतन्य लहरियाँ बहुत ही सुन्दर हैं। मैंने कहा, "देखो, कितने वर्ष बीत गए हैं फिर भी जो लोग यहाँ रहते थे या कार्य करते थे वे इस स्थान का आनन्द ले रहे हैं"। यहाँ रक्त-वर्ण भारतीय, जो कभी भारतीय थे, रहते थे। उन्हें हम अमरीकन भारतीय कहते हैं। वे लोग अत्यन्त अबोध एवं सहज थे। वे इतने आध्यात्मिक लोग थे क्योंकि वे माँ की पूजा किया करते थे। हर समय वे माँ की पूजा किया करते थे। मैंने अन्य देशों में भी देखा है। मुझे प्रसन्नता हुई कि आस्ट्रेलिया में लोग अत्यन्त धर्मनिरपेक्ष थे। ये सभी लोग उन्हें उत्साहित कर रहे हैं। ये देखकर आश्चर्य होता है कि उनमें बहुत मेधा है और अब उन्हें उस अवस्था में लाया जा रहा है ताकि वो जान सकें कि आस्ट्रेलिया में एक सम अधिकार है-राजनीतिक अधिकार। यह अत्यन्त साहसिक कार्य है।

आस्ट्रेलिया में श्री गणेश पुनरू नामक स्थान पर प्रकट हुए हैं। पुनरू एक बहुत बड़ा पर्वत है जो गणेश के आकार का प्रतीत होता है। नीचे की ओर जाती हुई इसकी एक बहुत बड़ी सूंड भी है। चैतन्य लहरियों ने साबित कर दिया है कि यह श्री गणेश हैं जो कि स्वयंभु हैं।

स्वयंभु गणेश बहुत से स्थानों पर प्रकट हुए हैं। परन्तु यहाँ पर मुझे ऐसे लगा कि जैसे यह स्थान चैतन्य लहरियों का स्रोत हो। आस्ट्रेलिया में भी ऐसा ही है। मैं उनके प्रति धन्यवादी हूँ क्योंकि केवल उनके कारण से ही सहजयोग इतनी आसानी से कार्यान्वित हुआ। सरकार ने भी हमें कभी परेशान नहीं किया और न ही कभी किसी अन्य प्रकार से समस्या हुई। मैं नहीं जानती कि कौन उनकी सहायता कर रहा है? संभवत: यह श्री गणेश ही हैं जो वहाँ पर सहजयोग की रक्षा कर रहे हैं और सहजयोग इतना बढ़ रहा है। इसी प्रकार से सब स्थानों पर, जहाँ कहीं भी आप हों, श्री गणेश की पूजा की जानी चाहिए और इस प्रकार वे आपकी सहायता करेंगे। चमत्कारिक रूप से वे आपकी सहायता करेंगे। परन्तु सर्वप्रथम आपको अपने सतीत्व के लिए, अपने पावित्र्य के लिए कुछ करना होगा क्योंकि पावित्र्य ही श्री गणेश हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

नवरात्रि पूजा

कबेला - 17.10.99

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम यहाँ देवी की पूजा करने के लिए एकत्र हुए हैं, अर्थात महाकाली की, जिन्हें हम दुर्गा भी कह सकते हैं।

सन्त एवं भद्र लोगों के उत्थान मार्ग में बाधाएं डालने वाली या उन्हें कष्ट देने का प्रयत्न करने वाली आसुरी शक्तियों का वध करने के लिए उन्होंने भिन्न अवतरण लिए। हम जानते हैं कि वे भिन्न रूपों में आई और बहुत से राक्षसों का संहार किया। उन्होंने बहुत से बुरे लोगों को भी नष्ट किया। हम ये नहीं जानते कि हमारे सम्मुख जो विश्व युद्ध हुए उनमें भी भले लोगों की रक्षा करने के लिए वो मौजूद थीं और इसी कारण से वे अत्याचारी तथा आसुरी लोगों द्वारा रचे गए कुचक्रों से बच पाए। राक्षस प्रवृत्ति लोगों में घृणा करने की तथा सभी सम्भव तरीकों से घृणा को अभिव्यक्त करने की शक्ति होती है। इनमें से कुछ तो जन्म से ही दुष्ट होते हैं और कुछ दुष्ट बन जाते हैं। जन्मजात दुष्टों को तो आप पहचान जाते हैं क्योंकि उनकी सारी शैली अत्यन्त आक्रामक और प्रतिरोधात्मक होती है। परन्तु घृणा की कोई सीमा नहीं होती, बिल्कुल कोई सीमा नहीं होती। वे यदि किसी से घृणा करते हैं तो अपनी घृणा को न्यायोचित ठहराने के लिए सभी प्रकार के तर्क करते हैं घृणा को न्यायोचित ठहराने के लिए। कभी-कभी तो वे इस घृणा को तर्कसंगत भी ठहराना नहीं चाहते! उन्हें लगता है कि वे घृणा करते हैं और घृणा करना उनका मौलिक अधिकार है। घृणा की ये शक्तियाँ कभी-कभी संगठित हो जाती हैं और विशालकाय असुर का रूप धारण कर लेती हैं जो मनुष्यों को सताता है, उन्हें कष्ट देता है। वे जो चाहे नाम धारण कर लें परन्तु वे पूर्णतया, शत प्रतिशत, आसुरी शक्तियाँ हैं और सर्वशक्तिमान परमात्मा के हृदय में उनके लिए रहम या करुणा का कोई स्थान नहीं। इन आसुरी शक्तियों को नष्ट होना होता है और उन्हें नष्ट करने का कार्य देवी का है जो कि प्रेम एवं करुणामयी माँ हैं। यह अत्यन्त असंगत कार्य है जो देवी को करना होता है-इन लोगों का वध करना, क्योंकि मानवमात्र के हित के लिए इन आसुरी शक्तियों का विनाश आवश्यक है। परन्तु वे पूरी तरह से नष्ट होते नहीं। जैसे बुरे मनुष्य कुछ समय के लिए जेल में चले जाते हैं उसी प्रकार वे भी कुछ समय के लिए नर्क में चले जाते हैं, वहाँ कष्ट उठा कर अधिक शक्तिशाली होकर वापिस आ जाते हैं और पुनः सन्तों और भले लोगों को सताने का प्रयत्न करते हैं। पूरे विश्व में यह आम रिवाज है। भले लोगों के रूप में भी वे आ सकते हैं या किसी ऐसे भद्र पुरुष के रूप में जो परमात्मा के विषय में बहुत कुछ जानता है। वे ये भी कह सकते हैं कि उनमें आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने की शक्ति है। सभी प्रकार के झूठ वे बोल सकते हैं क्योंकि उनमें वह आसुरी शक्ति होती है। सभी प्रकार के असत्य को अपनाकर वे दावा करते हैं कि हम ये हैं, हम वो हैं, हम आपको ये दे सकते हैं, वो दे सकते हैं। वास्तव में लोगों को नष्ट करने के लिए वे पृथ्वी पर अवतरित हुए हैं। हमारे यहाँ ऐसे बहुत से झूठे

लोग हुए हैं और बहुत से मूर्खों ने उनका अनुसरण भी किया। परस्पर विरोध में वे कभी नहीं बोलते। ईसा मसीह ने कहा है, "राक्षस कभी अपने घर की बुराई नहीं करेगा, "मानो वे एक ही घर में रहते हों और किसी ऐसी चीज़ के बारे में बात न करना चाहते हों जिससे उनकी सामूहिकता को या भाईचारे को हानि पहुँचे। उनका भाईचारा इतना दृढ़ है कि, चाहे जहाँ रहें, वे जानते हैं कि वे एकजुट हैं। आप कल्पना करें, सभी आसुरी लोगों का एकजुट होकर इस प्रकार से व्यवहार करना, कितना आश्चर्यजनक है! यही कारण है कि वे इतने सामूहिक हैं। मान लो एक ने भूमि के किसी विशेष हिस्से को अपना लिया है। उसका वहीं राज्य है, दूसरा दूसरी प्रकार से कुछ हथियाता है और तीसरा तीसरी प्रकार से। उनमें परस्पर कोई स्पर्धा नहीं है। उनका लक्ष्य केवल एक है- किसी भी प्रकार से परमात्मा की सृष्टि, संसार के सभी भद्र लोगों को नष्ट करना, क्योंकि अन्ततोगत्वा वही लोग आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करेंगे जिन्हें वास्तविकता का ज्ञान हो जाएगा। कलियुग में इस प्रकार का वातावरण बदतर स्थिति पर है। बहुत से मूर्ख लोग हैं, ऐसे मूर्ख जो चाहे सीधे हैं, अच्छे स्वभाव के हैं फिर भी वे इन आसुरी लोगों के प्रति खिंचे चले जाते हैं। कुछ अच्छे लोग भी उनके पदचिन्हों पर चलकर इन आसुरी शक्तियों का अनुसरण करने का प्रयत्न करते हैं। हैरानी की बात है कि इन भले लोगों को यह बात क्यों नहीं समझ में आती कि अच्छा क्या है, बुरा क्या है! परन्तु बहुत से अच्छे लोगों में भी इस विवेक बुद्धि की कमी है और यही कारण है कि वे भी गलत चीज़ों को अपनाते हैं और फिर हर समय इन्हें न्यायोचित ठहराने में लगे रहते हैं। जो भी कुछ वे करते हैं वह ठीक है, सर्वोत्तम है और इसका उनके पास प्रमाण है।

अब जैसे आप जानते हैं, कलियुग में ऐसे बहुत से लोग हुए और उनमें से बहुत से अब इस पृथ्वी से लुप्त हो गए हैं और वे अब हमें कष्ट नहीं दे सकते। परन्तु अब भी कुछ लोगों का पर्दाफ़ाश हुआ है। लोगों ने उन्हें इस प्रकार अनावृत किया है कि बिना प्रमाण के ऐसा किया नहीं जा सकता। परन्तु इन आसुरी लोगों में इतना साहस है, इतने आत्मविश्वास से वे परिपूर्ण हैं कि वे मनचाहा कार्य करने से बिल्कुल नहीं हिचकिचाते और जो भी व्यक्ति उनका पर्दाफ़ाश करने का प्रयत्न करता है उसे वे नष्ट कर देते हैं। ये लोग आपके मस्तिष्क में गलत धारणाएं भर देते हैं। वे कहते हैं कि हम महान व्यक्ति हैं, हम ऐसे हैं, हम वैसे हैं। सभी प्रकार की बातें करते हैं जिनका कोई प्रमाण नहीं होता और लोग उनसे प्रमाण मांगते भी नहीं। ये भी नहीं पूछते कि किस आधार पर आप ऐसा कह रहे हैं? इसका प्रमाण क्या है?

अतः सहजयोग ही समाधान है। सहजयोग में आपको अनुभव प्राप्त होता है और आपके पास प्रमाण होता है। इसमें आप उन्नत होते हैं, एकदम से आप महान सहजयोगी नहीं बन सकते, यह सच है। आपको परिपक्व होना पड़ता है। कुछ लोगों को परिपक्व होने में कम समय लगता है और कुछ को अधिक। कोई बात नहीं, परन्तु आप परिपक्व हो जाते हैं। परन्तु इस समय के दौरान यदि आप इन गलत लोगों के पास जाने का प्रयत्न करते हैं तो कोई संभावना नहीं रह जाती, आपको वापिस लाने का कोई रास्ता नहीं रहता। विशेषकर उन लोगों को जो सहजयोग में ऊँचे उठ जाते हैं उनका जब पतन होता है तो वो इतनी गहरी खाई में जा पड़ते हैं कि एक सर्वसाधारण सहजयोगी भी कह सकता है कि श्री माताजी उसकी ओर देखो, वह कहाँ चला गया है।

तो ऐसे समय में, जब ये सब चीज़ें घटित हो रही है, हमारा क्या कार्य है? हमें अपने अन्दर महाकाली की पूजा करनी चाहिए। हमारा क्या कर्तव्य है? वे क्या करती हैं? संभवत: हमें इसका ज्ञान नहीं है।

तो इन सब चीज़ों के घटित होते हुए हमें क्या करना चाहिए? हमें अपने अन्दर महाकाली की पूजा करनी चाहिए। संभवत: हमें इस बात का ज्ञान नहीं है कि महाकाली क्या करती हैं? पहला कार्य जो वे करती हैं वह है हमारी रक्षा करना। आप जहां भी हों, आप जो भी कर रहे हों, किसी भी खतरे में आप फँसे हुए हों, महाकाली आपकी रक्षा करती है। तो पहली चीज जो है वो ये है कि महाकाली आपकी रक्षा करती है। जो लोग मुझे पत्र लिखकर पूछते हैं कि उनकी रक्षा किस प्रकार हुई? किस प्रकार उनके रोग दूर हुए? किस प्रकार उनकी सहायता हुई? उन्हें जान लेना चाहिए कि उनके अन्दर स्थित महाकाली की शक्ति के कारण हुआ। वे आपके अन्दर विद्यमान हैं। महाकाली की पूजा करते हुए आप अपने अन्तर्स्थित महाकाली की पूजा कर रहे हैं। पूरे सम्मान के साथ आपको ये बात जान लेनी चाहिए कि महाकाली अत्यन्त संवेदनशील देवी हैं। वे अत्यंत संवेदनशील हैं। किसी का अहित जब आप करने का प्रयत्न करते हैं तो वह आपका पथप्रदर्शन करती हैं, आपको बताती हैं, बहुत से तरीकों से, कि ऐसा करना गलत है। आप क्यों किसी अन्य व्यक्ति का अहित कर रहे हैं? फिर भी यदि आप पछताते नहीं और अपनी सामान्य स्थिति पर वापिस नहीं आते तो वे आपको त्याग देती हैं। एक बार जब महाकाली आपको त्याग देती हैं तो आपका पर्दाफ़ाश हो जाता है और सभी प्रकार की बुराइयों में आप फँस जाते हैं। मैं पूछती हूँ कि जब आप उनकी पूजा करते हैं तो आप क्या चाहते हैं? आप चाहते हैं कि वे आपकी रक्षा करें। अपनी बुद्धि से कार्य करते हुए आप बहुत सी गलतियाँ करते हैं। आप ऐसे कार्य भी कर सकते हैं जो आपके हित में नहीं हैं और जो आपके लिए बहुत भयानक हो सकते हैं। परन्तु वे ऐसी देवी हैं जो आपका पथ-प्रदर्शन करती हैं कि आप इस प्रकार के खतरों से किस प्रकार बचें?

वे आपके जीवन की रक्षा करती हैं, आपके शरीर की रक्षा करती हैं। आपके शरीर के सभी अवयवों की रक्षा करती हैं। वे ही आपको जीवन की पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती हैं। उनके साम्राज्य में आप स्वयं को पूर्णत: सुरक्षित पाते हैं। आपको किसी चीज़ का डर नहीं लगता। क्योंकि आपने उनका साम्राज्य छोड़ दिया है, उस साम्राज्य से आप बाहर आ गए हैं, यही कारण है कि आप भयभीत हैं। परन्तु यदि आप उनके सुन्दर पथ प्रदर्शन में रहें, उनकी कृपा छाया में रहें तो आपको कभी डर नहीं सताएगा। आप कोई गलत कार्य नहीं करेंगे। जब भी कभी आप कोई गलत कार्य करने का प्रयत्न करेंगे तो वे आपका हाथ पकड़ लेंगी। वास्तव में वे पथ-प्रदर्शक शक्ति हैं। वे ही हमें हमारा अस्तित्व प्रदान करती हैं। उनके बिना हम जीवित नहीं रह सकते क्योंकि वे ही श्री शिव की शक्ति हैं। वे हमें बहुत कुछ प्रदान करती हैं। उदाहरण के रूप में वे हमें आराम, निद्रा और सत्य प्रदान करती हैं। वे आपको बताती हैं कि क्या सत्य है और क्या असत्य। कभी-कभी अपने अहंकारवश लोग समझ बैठते हैं कि जो मैं सोचता हूँ वही सत्य है। तब माया की सृष्टि करके वे इस बात को रोशनी में लाती हैं। एक प्रकार के ऐसे भ्रम की सृष्टि करती हैं कि आप सोचने लगते हैं कि यह क्या है? इसीलिए उन्हें 'भ्रान्ति' नाम दिया गया है अर्थात् भ्रम। वे आपको भ्रम में भी फँसा

देती हैं। आपकी परीक्षा लेती हैं। भ्रम में आपको फँसाती हैं और अन्त में इस भ्रम से आपको मुक्त भी करती हैं।

वे हमें आराम प्रदान करती हैं क्योंकि आपकी सारी ज़िम्मेदारियाँ वे सम्भाल लेती हैं। आपकी सारी समस्याओं को वो ले लेती हैं। वे ही सारी समस्याओं का समाधान करती हैं। हम ही लोग उन पर अपनी सारी समस्याओं को छोड़ देना भूल जाते हैं। आप यदि अपनी समस्याओं को उन पर छोड़ दें तो सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है। इतना ही नहीं आप स्वयं को वास्तव में आशीर्वादित भी महसूस करते हैं। ये आशीर्वाद केवल शारीरिक ही नहीं होते, मानसिक भी होते हैं। वे आपके मस्तिष्क को चिन्ताओं से पूरी तरह से मुक्त कर देती हैं। न तो वे चिन्ता करती हैं और न ये चाहती हैं कि आप चिन्ता करें। यदि आप चिन्ता करते हैं तो वे ये दर्शाने का प्रयत्न करती हैं कि चिन्ता करते हुए आप उनकी उपेक्षा कर रहे हैं उन्हें स्वीकार नहीं कर रहे। चिन्ता एक आम चीज़ है और लोग चिन्तित रहने में गर्व महसूस करते हैं। 'ओह' मैं चिन्तित था। किस प्रकार आप चिन्तित हो सकते हैं जब आपकी माँ साक्षात् महाकाली हैं। वे सभी राक्षसों का वध कर सकती हैं, उन सबको समाप्त कर सकती हैं। वे जानती हैं कि कार्य किस प्रकार करने हैं? जब आप उनके सम्मुख शिशु सम हैं किसी भी चीज़ के विषय में आप किस प्रकार चिन्ता कर सकते हैं? **तो आपकी चिन्ताएं समाप्त हो जाती हैं वे आपकी चिन्ता करती हैं। आपको अपनी चिन्ता की कोई जरूरत नहीं। यही विशेष बात है। उनकी सुरक्षा इतनी महान है। वे स्वयं इतनी सुरक्षित हैं कि वे आपको सारी वांछित सुरक्षा प्रदान करती हैं। आप उनके चरण कमलों को थामे रह सकते हैं। उनकी साक्षात् मूर्ति का ध्यान कर सकते हैं या किसी भी तरह से ध्यान कर सकते हैं और उनकी प्रार्थना कर सकते हैं।** बहुत से लोग केवल उनसे प्रार्थना करके रोगमुक्त हो रहे हैं क्योंकि वे ही रोगमुक्त करने वाली हैं। वे ही आपको जटिल रोगों से मुक्त करती हैं, वे रोगमुक्त कर सकती हैं।

उन्हें क्या पसन्द है? महाकाली को प्रकाश पसन्द है। उनकी पूजा रात्रि में होती है क्योंकि रात्रि में हम दीप जला सकते हैं। वे व्यक्ति को ज्योतिर्मय करना पसन्द करती हैं। उन्हें प्रकाश पसन्द है। सूर्य पसन्द है। हर ऐसी चीज़ पसन्द है जिसमें प्रकाश हो, जो चमकती हो। आपने ऐसे लोगों के विषय में सुना होगा जिन्हें मैं नहीं जानती क्या कहा जाता है? परन्तु विशेष रूप से पश्चिम में इनका उपयोग होता है। उनके बड़े-बड़े दाँत होते हैं और वे लोग सूर्य के सामने जीवित नहीं रह सकते। ज्यों ही सूर्य उदय होता है वे अन्दर जाकर सो जाना चाहते हैं। सूर्य को वो देख नहीं सकते क्योंकि प्रकाश को सहन कर पाना उनके लिए सम्भव नहीं। अब यहाँ पर क्या हुआ? महालक्ष्मी यहाँ से चली गई। उन लोगों से महाकाली दूर हो गई और जब महाकाली चली गई तो वे भयभीत हैं और डरने वाले इन लोगों पर अन्य लोग आक्रमण करते हैं। इस महाकाली की शक्ति को कार्यान्वित करने के लिए सूर्य बहुत महत्वपूर्ण है। विशेष तौर पर पश्चिमी देशों में हम लोग बहुत परिश्रमी हैं और सूर्य के अनुरूप चलने वाले हैं और सूर्य की पूजा करते हैं। ये सभी कुछ हम करते हैं। सूर्य की पूजा करते हैं और अत्यन्त आक्रामक भी हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में महाकाली हमें सन्तुलन प्रदान करती हैं। हमें विश्राम पहुँचाकर, पूरी तरह से हमारी सुरक्षा करके वे ही हमें सन्तुलन प्रदान करती हैं। कभी-कभी स्पर्धा में हम इस प्रकार फँसे हुए होते हैं कि वास्तव में चिन्तित होते हैं

और कुछ ऐसा कर डालना चाहते हैं जिसकी सामर्थ्य हममें नहीं होती। तब हम बहुत परेशान हो उठते हैं और समझ नहीं पाते कि क्या करें। ऐसी स्थिति में वे ही हमें निद्रा प्रदान करती हैं। और जब हम सो जाते हैं तो वे हमारी देखभाल करती हैं, हमें सहलाती हैं और हमारी सारी समस्याओं को ले लेती हैं। वे इतने सारे कार्य कर रही हैं परन्तु उनके लिए हम क्या कर रहे हैं? यह चीज़ हमें देखनी चाहिए। मुख्य चीज़ ये है कि क्या हम स्वयं उनकी पूजा कर रहे हैं? उनके बच्चे उनकी पूजा करें यह उन्हें अच्छा लगता है। इसी स्तर पर वे उनसे एक हो सकती हैं और उन्हें अपनी करुणा एवं प्रेम प्रदान कर सकती हैं तथा सभी आसुरी शक्तियों से उनकी रक्षा कर सकती हैं। परन्तु यह बात अच्छी तरह से समझ ली जानी चाहिए कि जो लोग अभी तक स्थिर नहीं हुए हैं वे अभी तक महाकाली की सुरक्षात्मक भूमि से पूरी तरह जुड़े नहीं हैं और ऐसे लोगों पर आक्रमण हो सकता है। एक बार जब वह ये क्षेत्र छोड़ देते हैं तो उन्हें बुरी तरह आघात पहुँच सकता है; उनका वध हो सकता है और कुछ भी उनके साथ घटित हो सकता है।

इस कलियुग में, इस भयानक समय में हम रह रहे हैं। इसमें कुछ भी घट सकता है। अत: हमें बहुत सावधान रहना होगा। हमें अपने मस्तिष्क को ध्यान से देखना होगा कि ये किस प्रकार कार्य करता है? और हमें क्या शिक्षा देता है? हमें क्या बताता है? समझने का प्रयत्न करें कि इस दुष्ट व्यक्ति की योजना क्या है? क्यों आप इसके हाथ में खेल रहे हैं? किस प्रकार आप इसके हाथों में खेल सकते हैं और किस प्रकार उसकी इच्छा के अनुसार आप सभी गलत कार्य कर सकते हैं? दूसरी बात ये है कि अहम् उनके विरूद्ध है। अहम् आज की सबसे बड़ी समस्या है। अहम् का दिखावा,"नहीं, नहीं, मैं ऐसा कर सकता हूँ," अहम् कहता है-मैं इसे कार्यान्वित कर दूंगा, यह कार्य हो जाएगा और इस प्रकार मनुष्य अहम् के सामने घुटने टेक देता है। वे बहुत सन्तुष्ट होते हैं कि उनका अहम् इतना दृढ़ है, वे महाकाली की शक्तियों की आवाज भी नहीं सुनना चाहते।

आपको शिशुसम होना पड़ेगा, बच्चों की तरह से अबोध। महाकाली अबोध हैं और अबोध लोगों से प्रेम करती हैं। वे स्वयं अबोध हैं और अबोध लोगों से प्रेम करती हैं। आपकी देखभाल भी वे इसलिए करती हैं क्योंकि आप अबोध हैं, चालाक नहीं हैं, अपने अहम् से दूसरे लोगों के साथ खिलवाड़ करने का प्रयत्न नहीं करते। आप यदि अबोध हैं तो वे आपकी सहायता करती हैं। निश्चित रूप से आपकी सहायता करती हैं। अहम् का नियंत्रण किया जाना आवश्यक है क्योंकि अहम् उनका सबसे बड़ा शत्रु है। आपका अहम् उन्हें अच्छा नहीं लगता। वे चाहती हैं कि आप अहम् विहीन हों, अबोध हों। आप जानते हैं कि सर्वप्रथम उन्होंने श्री गणेश का सृजन किया। यही कारण है कि हम श्री गणेश की पूजा करते हैं। हमें अबोध बनना है अर्थात् किसी भले या बुरे कार्य की योजना हमें नहीं बनानी। हमारी कोई मंशा नहीं है। हमारे कार्य कालातीत गतिविधियाँ हैं। आप चिन्ता न करें कि आप क्या करने वाले हैं और क्या नहीं करने वाले। इस प्रकार का कुछ भी आप न करें। पूर्ण अबोधिता में आप जीवित हैं और उसका आनन्द ले रहे हैं और दूसरे लोगों को भी यह आनन्द लेने में सहायता कर रहे हैं। घर में यदि एक बच्चा हो तो वह सौ लोगों को प्रसन्न कर सकता है। ये भी ऐसा ही है क्योंकि बच्चों में अबोधिता की शक्ति होती है और महाकाली इसी का सम्मान करती हैं। आप कई बार सोचते

हैं कि लोग धोखेबाज किस प्रकार हो सकते हैं। कैसे वे हमें धोखा दे सकते हैं? किस प्रकार इतने आक्रामक हो सकते हैं? कई बार तो वे भयभीत करने वाले कार्य करते हैं और आपसे बहुत आशा करते हैं। परन्तु यह सब कुछ घटित हो रहा है और घटित हुआ है। आपको इन चीज़ों की चिन्ता नहीं करनी चाहिए और अपनी अबोधिता पर डटे रहना चाहिए। आप हैरान होंगे कि आपकी पूरी तरह से रक्षा की जाएगी। कैसे? क्योंकि महाकाली आपके आस पास रहेंगी और यदि आप अबोध हैं तो आपकी देखभाल करेंगी। अबोध व्यक्ति क्रोधित नहीं होता। क्रोधित होने की क्या बात है? अबोधिता की अपनी शक्ति होती है, मजबूती होती है। ये अत्यन्त शक्तिशाली है। क्रूर व्यक्ति भी जब किसी बच्चे को देखता है तो सावधान हो जाता है, अरे एक बच्चा है। पूरा विश्व जानता है कि बच्चों को किसी प्रकार से न तो परेशान किया जाए न कष्ट दिया जाए क्यों? क्योंकि बच्चे इतने अबोध होते हैं। तो अबोधिता का गुण वास्तव में आपकी बहुत सहायता करेगा। क्योंकि महाकाली आपके अबोधिता के गुण का सम्मान करती हैं।

आपकी सौहार्द्रता के कारण वे आपको प्रेम करती हैं। परस्पर सौहार्द्रता, परस्पर प्रेम और अन्य लोगों की देखभाल, ये सब उन्हें पसन्द है आप यदि सहजयोगी हैं, आप यदि आत्मसाक्षात्कारी हैं तो वे सदैव आपके साथ हैं। परन्तु वे देखती हैं कि अपनी करुणा में आप क्या कर रहे हैं? कितने लोगों को आप रोगमुक्त कर रहे हैं, और कितने लोगों की आप सहायता कर रहे हैं? जो भी कुछ आप करते हैं उसकी उन्हें पूरी जानकारी है। मैं कहूँगी कि महाकाली इतनी महान शक्ति हैं कि आपके विषय में वे सब कुछ जानती हैं, सभी कुछ। ये आपके मस्तिष्क को जानती हैं, आपके हृदय को जानती हैं, इन्हें आपके स्वास्थ्य की जानकारी है, ये सभी कुछ जानती हैं। वास्तव में महाकाली पूर्ण माँ हैं जो अपने नन्हें बच्चे की हर तरह से देखभाल करती हैं। इस प्रकार वे जानती हैं कि यह बच्चा बहुत अबोध है कुछ गड़बड़ नहीं करता। जब आप बहुत छोटे बालक होते हैं तो आपकी माँ आपकी देखभाल करती है। इसी प्रकार महाकाली भी आपकी देखभाल करती है। तब महा सरस्वती शक्ति आकर आपको शिक्षित करती हैं, ज्ञान की अन्य धारणाएं देती है आदि-आदि। परन्तु आपके अन्तर्निहित शिशु की देखभाल करना, आपकी अबोधिता और सौहार्द्रता की देखभाल करना महाकाली की शक्ति का कार्य है। अपने बच्चों के प्रति वे अत्यन्त संवेदन शील हैं। कोई भी उनके बच्चों को छूने का साहस नहीं कर सकता। उनके लिए सभी लोग शिशु सम है आत्मसाक्षात्कारी लोगों को वे विशेष रूप से अपना बच्चा मानती हैं और देखती है कि उन्हें किसी प्रकार से चोट न पहुँचे उनके साथ कोई दुर्घटना न घटे। वे सदैव उनके साथ रहती हैं। प्रश्न पूछा जा सकता है कि यदि वे व्यक्ति है तो किस प्रकार इतने लोगों के साथ यह सकती हैं? क्योंकि वे सर्वव्यापी हैं। वे सर्वत्र मोजूद हैं, आपके जीवन में, हर स्थान पर, विशेष रूप से सहजयोगियों के तो वे हमेशा साथ होती है, चाहे जो भी आप कर रहे हो। आपकी यदि कोई दुर्घटना होती है वहाँ भी आपकी देखभाल करने के लिए वे मौजूद होती हैं। देवदूत की तरह से वे सदैव आपके पीछे होती है। और यदि आप नि:स्वार्थ भाव से, भौतिक उपलब्धियों के लिए नहीं, उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए, हृदय से उनकी पूजा करते हैं तो आपको कुछ नहीं हो सकता। उनके आशीर्वाद बहुत महान हैं। इन्होंने मानव को सम्पन्न बना दिया है और पृथ्वी को सम्पन्न कर दिया है। महाकाली के

आशीर्वाद ने सभी कुछ सम्पन्न कर दिया है।

इसके पश्चात् नि:सन्देह, महालक्ष्मी आती हैं। उनकी खूबी ये है कि महालक्ष्मी तत्व में आप निर्लिप्त हो जाते है। सोचने लगते है। कि आखिरकार ये संसार क्या है और आप में एक प्रकार की निर्लिप्सा की भावना आ जाती है। आप सोचने लगते हैं। कि संसार से भी बेहतर कुछ होगा, इससे परे भी तो कोई सत्य होगा। जिन लोगों को दुष्टों ने सताया होता है ऐसे लोग सदैव ऐसा सोचते हैं कि कोई तो होगा जो हमे इस दुर्दशा से उबारेगा। यहाँ आपके अन्दर महालक्ष्मी तत्व प्रवेश करता है। यह उत्थान की देवी का तत्व है। ये देवी आपके मस्तिष्क में एक विचार उत्पन्न करती है कि इससे आगे क्या है? आपको क्या करना होगा? क्या जीवन का यही लक्ष्य है? जीवन का उद्देश्य क्या है? हम इस पृथ्वी पर क्यों अवतरित हुए हैं? ऐसी क्या विशेष बात है कि हम पृथ्वी पर जीवित रहें। ऐसे बहुत से मूल प्रश्न उठने लगते हैं और आप जिज्ञासु बन जाते हैं। इसमें भी आपको समझना होगा कि महालक्ष्मी का सिद्धांत उससे कहीं भिन्न है जैसा लोग समझते हैं। वे सोचते हैं कि उनकी जिज्ञासा बोधगम्य होनी चाहिए यह मस्तिष्क के माध्यम से होनी चाहिए या तर्कसंगत होनी चाहिए या वैज्ञानिक। इस प्रकार वे सत्य साधना करते हैं। ऐसा होना सभव नहीं है। महालक्ष्मी का सिद्धान्त ये है कि आपमें सत्य और केवल सत्य को जानने की गहन इच्छा होनी चाहिए। सत्य के सिवाय किसी अन्य चीज़ को जानने की नहीं। जब आप इस प्रकार से सोचने लगेंगे तो अन्य चीज़ों के पीछे न दौड़ेंगे। बहुत से लोगों ने नशे की आदत डाल ली। उन्होंने ये सोचा कि नशा करने से वे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे। ये गलत धारणा है। चेतना को प्राप्त करने के लिए आप चेतना से दूर किस प्रकार जा सकते हैं। चेतना बहुत ही महत्वपूर्ण चीज़ है। चेतना के साम्राज्य में आप यदि जाना चाहते हैं तो आपको समझना होगा कि मूल चेतना खोई नहीं जानी चाहिए। नशे और मदिरापान से या अन्य चीज़ों से यदि मूल चेतना खो जाती है तो आपको कुछ प्राप्त न होगा। लोग सोचते हैं कि सत्य साधना के लिए वे ऐसा कर रहे हैं। कई बार तो वे सत्य साधना को गलत कार्य करने का बहाना बना लेते हैं। ये तो स्वयं से प्रतिशोध लेने जैसा है। ये सोचना कि अब आप सत्य साधना कर रहे हैं स्वयं से प्रतिशोध लेना है। यह सच्ची साधना नहीं है। सच्ची साधना में व्यक्ति को केवल ध्यान धारणा करनी होती है और इसके द्वारा उचित मार्ग खोजना होता है परन्तु ऐसा पुस्तकें पढ़कर या झूठे गुरुओं को सुनकर नहीं करना होता।

कुण्डलिनी जागृति ही वास्तविकता को जानने का एक मात्र मार्ग है, कोई अन्य मार्ग नहीं। कोई भी यह नहीं बताता कि कुण्डलिनी जागृति ही एक मात्र मार्ग है। लोग आपको बताएंगे कि हम फलां स्थान पर जाएंगे, वहां से दूसरे स्थान पर चलेंगे और उस स्थान से एक और स्थान तक। ये सब करना होगा और अन्ततोगत्वा आप वहीं पहुँच जाएंगे जहाँ से आप चले थे। यह तो एक स्थान से दूसरे स्थान तक, एक झूठ से दूसरे झूठ तक, एक असत्य से असत्यता तक भटकते रहने जैसा है। भटक-भटक कर बहुत से साधक खो जाते हैं। बहुत से साधक खो गए हैं क्योंकि उन्होंने सोचा कि इस प्रकार की साधना बहुमूल्य है, क्योंकि आप गुरु को बहुत सा पैसा दे सकते हैं। मेरा कहने से अभिप्राय है कि आप गुरु को खरीद सकते हैं और इस प्रकार सभी धनी लोग साक्षात्कार को पा सकते हैं। परन्तु मैं नहीं सोचती कि अच्छे लोगों का बहुत बड़ा प्रतिशत धनी हो। जो लोग

अच्छे है वो अच्छे हैं चाहे वो अमीर हों या न हों। परन्तु ऐसे लोग व्यक्ति (श्री माताजी) के ईद गिर्द एकत्र होने का प्रयत्न करते हैं क्योंकि मेरे विचार से उन्हें धन का सूक्ष्म अहँ है और सोचते हैं कि हम सभी चीजों को खरीद सकते है। एक बार मैं अमरीका में थी और एक महिला मुझे मिलने को आई। वह न जानती थी कि मैं आध्यात्मिक व्यक्ति हूँ। उसने कहा, कि एक बहुत अच्छा गुरु अमरीका में आया है। मैने कहा, ''अच्छा, वह क्या करता है?'' उसने कहा कि सेल (Sale) लगी हुई है, मैंने कहा, ''वास्तव में, आप उसे आधा पैसा देकर उससे आशीर्वाद ले सकते हैं, ठीक है।'' अगले सप्ताह उसने कहा कि अब वह सेल चौथाई रकम तक आ गई है, यदि आप उसे एक चौथाई पैसा दें तो वह आपको पूरा ज्ञान दे देगा। मैने कहा, कि कैसे वह इस प्रकार लेन-देन कर सकता है, यह धन तो नीयत राशि का बहुत कम हिस्सा है? मैंने कहा, ''जब आप उसे नीयत राशि का आधा पैसा दे रही थी तो वह आधा ज्ञान दे रहा था और अब आप एक चौथाई पैसा दे रही हैं तो वह पूरा ज्ञान दे रहा है! उसने कहा, ''यही बात है, वह अत्यन्त उदार है, उसकी यही खूबी है।'' मैने कहा, ''ऐसे लोग जो सोचते हैं कि वे सत्य को खरीद सकते हैं, वे कभी सत्य को प्राप्त नहीं कर सकते। आप सत्य को खरीद नहीं सकते। कुण्डलिनी की जागृति के लिए आप पैसा नहीं दे सकते, नहीं। न ही आपको कुण्डलिनी जागृति के बदले में कोई पैसा लेना चाहिए।

आत्मसाक्षात्कार पूर्णत: परमात्मा की कृपा है और इसके लिए आप धन नहीं ले सकते, आप इसे बेच नहीं सकते। ये इतनी सस्ती चीज नहीं है कि बेची जा सके। जब आप यह बात समझ जाते हैं तो महालक्ष्मी शक्ति कार्य करती है। और महालक्ष्मी शक्ति वास्तव में उन्हीं लोगों के लिए बनी है जो सच्चे साधक हैं, जो वास्तव मे खोज रहे हैं। यह इतनी अच्छी तरह से कार्य करती है कि उन लोगों को अत्यन्त सहज तरीके से स्वत: ही आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाता है। आप सब को भी यह सहज आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है। आप लोगों को हिमालय नहीं जाना पड़ा और न ही इस प्रकार का कोई तप करना पड़ा। अब ये सारी चीजें समाप्त हो चुकी हैं, आप यह सब कर चुके हैं, सभवत: अपने पूर्व जन्मों में आपने यह सब कार्य कर लिए है। अब आपको कुछ नहीं करना, आप इसे प्राप्त कर सकते है। यहाँ बैठकर आप इसे प्राप्त कर रहे हैं। विश्व के किसी भी कोने में आप हों, आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं। और यह तेजी से प्रसारित हो रहा है, फैल रहा है। अब सहजयोगियों का कर्त्तव्य बनता है कि वे सहजयोग को फैलाएं।

ये बात समझी जानी आवश्यक है कि महालक्ष्मी और महाकाली दोनों साथ-साथ चलती हैं। महाकाली आपको आशीर्वाद देती है और आपके साथ रहती हैं। आप उनके साम्राज्य में होते हैं। महालक्ष्मी आगे आती है और निश्चित रूप से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने तथा अपनी समस्याओं को हल करने में आप की सहायता करती है। आर्थिक समस्याओं के साथ-साथ वे आपकी अन्य समस्याओं का समाधान भी करती हैं। सबसे बड़ी समस्या जिसका वे समाधान करती है वह है आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने की आपकी महानतम इच्छा को पूर्ण करना। अत: उन दोनों में कोई स्पर्धा नहीं है। ये तीनों शक्तियाँ साथ-साथ कार्य करती हैं और जिस चीज की भी आवश्यकता होती है उसे ये कार्यान्वित करती हैं। परन्तु महाकाली पथ-प्रदर्शन करती हैं कि कहाँ, किस सहायता की आवश्यकता हैं। यही कारण है कि महाकाली शक्ति का बहुत

सम्मान होता है। जैसा हम जानते है, महाकाली ने बहुत से असुरों और राक्षसों का वध किया। परन्तु अभी भी बहुत से राक्षस विद्यमान है, अभी भी वे जीवित हैं, परन्तु मुझे विश्वास है कि वो भी समाप्त हो जाएंगे। उनमें से एक भी न बचेगा। परन्तु अभी भी हमें अत्यन्त सावधान और चुस्त रहना चाहिए तथा ये खोजने का प्रयत्न करना चाहिए कि लोगों में क्या दोष है? वे क्या कर रहे हैं और किस चीज का प्रचार करने का प्रयत्न कर रहे है? आपको इस प्रकार से परिपक्व होना है ताकि इन आसुरी लोगों के विषय में आपको पूरी जानकारी हो। खोज-निकालें कि वे झूठे लोग क्या कर रहे हैं? ऐसा करना बहुत सुगम है क्योंकि आप लोग आत्मसाक्षात्कारी हैं और अपने ज्योतित चित्त से आप जान सकते हैं कि किस संस्था में क्या दोष है? ध्यान-धारणा करने का यह सर्वोत्तम मार्ग होगा। किसी भी प्रकार से आक्रामक नहीं होना, केवल ध्यान धारणा करनी है और महाकाली से प्रार्थना करनी है कि उन लोगों को नष्ट करें जो विश्व को नष्ट कर रहे हैं। हे, महाकाली कृपा करके दुष्ट लोगों का वध करो। ये उनका कार्य है और ऐसा करने में उन्हें प्रसन्नता होगी। परन्तु किसी व्यक्ति को तो उनसे प्रार्थना करनी होगी, याचना करनी होगी। ऐसा करना बहुत अच्छा होगा क्योंकि जब तक आप उन्हें इनके विषय में कहेंगे नहीं ऐसे बहुत से दुष्ट लोगों पर संभवत: उनका चित्त न जा पाएगा। अत: सर्वोत्तम तरीका ये होगा कि सदैव उनसे व्यक्तिगत रूप से, राष्ट्रीय, सामूहिक या विश्व स्तर पर सहायता की याचना करें। वे सर्वव्यापी हैं, पूरे ब्रह्माण्ड में व्यापक हैं। **आप कहीं भी हों, आपका कोई भी रंग हो, कोई भी जाति हो, कोई भी राष्ट्र हो, जो कुछ भी हो, परन्तु वे सदैव आपके अन्दर विराजमान हैं। उनकी पूजा करना, उन्हें जागृत करना, यही आपका एक मात्र कर्त्तव्य है।** यदि व आपके अन्दर जागृत हो जाएंगी तो आप विनम्र व्यक्ति बन जाएंगे। आप देखेंगे कि आप कौन सी गलतियाँ करते रहें हैं और इनके बारे में सोचेंगे। आप स्वय को दोषी नहीं मानेंगे, परन्तु आपको वे गलतियाँ बुरी लगेंगी और आप निश्चय करेंगे कि वैसा पुन: कभी न करेंगे। आपको लगेगा कि मैंने बहुत बड़ी गलती की है और तब आप स्वय को सुधारने का प्रयत्न करेंगे। जब आप का हृदय पवित्र होता है तब यह सब अच्छी तरह से कार्यान्वित होना है। हृदय शुद्ध होना चाहिए। आपका हृदय यदि पवित्र नहीं है, दूसरे लोगों से स्पर्धा के लिए या किसी भी प्रकार के भौतिक लाभ के लिए यदि आप सहज योग कर रहे है तो यह कार्यान्वित न होगा। आपको ऐसे ढंग से सहजयोग करना होगा जो अत्यन्त पवित्र हो, मानो एक नन्हें शिशु की तरह से आप अपनी माँ की पूजा कर रहे हैं। जैसे एक नन्हा शिशु अपनी माँ से प्रेम करता है और उसकी पूजा करता है। यह अत्यन्त सहज सम्बन्ध है जिसे हम सब भुला चुके हैं। किस प्रकार हम अपनी माँ से प्रेम करे, किस प्रकार उनके पथ प्रदर्शन में रहें और किस प्रकार उनकी सुरक्षा में सुरक्षित रहें। यह इतनी सीधी बात हैं और आपने बचपन में ही यह बात जान ली थी। आप यदि वास्तव मे अपनी माँ की पूजा करना चाहते हैं तो एक बार फिर आपमें उसी बचपन का लौट आना आवश्यक है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

श्री आदिशक्ति की चौसठ शक्तियाँ

(आदिशक्ति पूजा काना जोहारी न्यूयॉर्क 20 जून 1999)

आदिशक्ति पूजा के अवसर पर अमरीका की सामूहिकता ने श्री माताजी की चौवन नामों से स्तुति की। श्री माताजी ने इस सूची का पुनरावलोकन एवं सम्पादन किया तथा उन्होंने स्वयं दस नाम इसमें जोड़े।

सभी नामों के पश्चात्, "ॐ श्री आदिशक्ति नमो नमः" का उच्चारण करें।

1. श्री आदिशक्ति - आप ही वो तत्व है जिसने चौदह भुवनों के ब्रह्माण्ड की सृष्टि की। आप हमारी बुद्धि से परे हैं।
2. ॐ आप ही का नाद है। जो आपकी तीनों शक्तियों का गुँजन पूरे ब्रह्माण्ड में करता है।
3. आपके चित्त का आनन्द - चित्त विलास-आपकी पूरी सृष्टि में अभिव्यक्त

होता है।

4. दिव्य लीला में सर्वशक्तिमान परमात्मा आपकी शक्तियों द्वारा कार्य करता है।
5. श्री सदाशिव की इच्छा एवं श्वास की एकाकारिता आपसे है।
6. श्री सदाशिव की प्रसन्नता के लिए आपकी शक्ति परम-चैतन्य सितारों एवं स्वर्ग लोक को आनन्द से गुँजायमान कर देती है।
7. नि:सन्देह आप ही ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का स्रोत हैं। परमेश्वरी प्रेम के सूक्ष्मतम पारलौकिक तत्व के रूप में यह शक्ति विकीर्णित होती है।
8. भौतिक तत्वों एवं चेतना से परे आदिशक्ति की कृपा वहाँ पर विद्यमान है जहाँ सत्य का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।
9. आप अनिर्वचनीय है, अपार है। हम आपको दिव्य श्वास (Pneuma), जीवन्त जल कहकर पुकारते है परन्तु आप तो इससे भी बहुत अधिक है। केवल देवता ही आपकी महान शक्तियों का दर्शन कर सकते है।
10. सर्वशक्तिमान परमात्मा आपके दिव्य नृत्य में श्री अदिशक्ति भी आपकी सभी शक्तियों के साथ एकरूप हो जाती हैं।
11. आप ही परम चैतन्य की आद्य शक्ति हैं जिसने ईसा-मसीह की माँ का रूप लिया।
12. आप ही मूल सृजन कर्त्ता (Creatrix Power) हैं। वह मादा सृजनात्मक शक्ति जो सर्वशक्तिमान परमात्मा की शन्ति को बनाए रखती है।
13. आपकी महालक्ष्मी शक्ति के माध्यम से हम चतुर्थ आयाम की कालातीत शन्ति अनुभव करते हैं।
14. हे श्री आदिशक्ति, आप सर्वशक्तिमान परमात्मा को उनका पावन कार्य करने के योग्य बनाती हैं। वस्तुत: ब्रह्माण्ड में आप ही महानतम शक्ति हैं।
15. कोई यदि आदिशक्ति के विरुद्ध कार्य करे तो सर्वशक्तिमान परमात्मा आश्चर्य जनक तेजी से दण्डित करते हैं।
16. आपके सर्वप्रथम सृजित श्री गणेश कार्बन के अणुओं में जीवन के सार गुँजायमान करते हैं। कृपा करो कि वे मानव के अणु रेणू में विवेक एवं अबोधिता को पुनर्जागृत कर दें।
17. आपने दिव्य संसार तथा जिज्ञासुओं के विश्व का सृजन किया। कृपा करें कि हमारा उत्थान इस दिव्य लीला में विलीन हो जाए।
18. हे आदिशक्ति, उत्थान ऐसी शक्ति है जो मानव जीवन में आपकी दिव्य लीला को उन्नत करती है।
19. हे आदि कुण्डलिनी, आपने आदि चक्रों की रचना की तथा जीवन के रहस्य उद्घाटन करने के लिए द्वारा खोले।
20. हमारी पृथ्वी माँ की कुण्डलिनी का सृजन करने वाली आप ही हैं।
21. सामान्यतम पुष्प का भी एक अंश आपके लिए होता है और विशालतम वृक्ष का एक भाग भी आपको अपर्ण किए जाने के लिए होता है।
22. पृथ्वी माँ की हरी साड़ी के सौन्दर्य से लेकर शेर एवं चीते की शानोशौकत तक प्रकृति द्वारा बनाए गए सभी जीव-जन्तु आपके हैं।
23. पृथ्वी माँ के गुरुत्वाकर्षण से लेकर आपके सभी स्वर्गीय ग्रह आपकी तेजस्वी शक्ति द्वारा नियंत्रित हैं।
24. आपकी शक्ति, परम-चैतन्य प्रकृति और उसके तत्वों को व्यवस्थित करती है और

इसकी सर्वव्यापक शक्ति हमें आपकी कृपा का पात्र बनाती है।

25. हे श्री आदिशक्ति, आप ही पृथ्वी माँ की कलात्मक सृष्टा हैं। जो लोग पृथ्वी माँ का सम्मान करते हैं उन्हें आप प्रेम करती हैं।

26. हे आदिशक्ति, विशुद्धि की भूमि (अमरीका) आपके विशाल सृजन का एक पक्ष है। इस भूमि के लोगों का अंतर्परिवर्तन करने के लिए आप यहाँ चैतन्य लहरियाँ बढ़ाइए।

27. अमरीका के मूल निवासी दिव्य माँ के रूप में आदिशक्ति की पूजा किया करते थे और भूमि को पावन मानकर सम्मान करते थे। कृपा कीजिए कि अन्य सभी लोग जो इस भूमि पर रहते हैं और इसकी सम्पदा का आनन्द लेते हैं, उनमें भी यह दृष्टिकोण लौट लाए।

28. जीवन्त प्रक्रियाओं का रहस्य केवल आपका है। कोई व्यक्ति इसे दोहरा नहीं सकता। कृपा करो कि मानव इस सत्य के प्रति जागरूक हो जाए।

29. ओ, ऋतम्भरा प्रज्ञा, आप श्री आदिशक्ति की शक्तियों में से एक हैं। आप ही जीवन्त कार्यों की शक्ति है।

30. आप ही सम्पूर्ण जीवन को नियमित एवं आयोजित करती हैं।

31. हे आदि शक्ति, विष्णु लोक से गोकुल में, जहां श्री कृष्ण का बाल्यकाल व्यतीत हुआ, आप सुरभि के (कामधेनु) के रूप में अवतरित हुई हैं।

32. हे आदिशक्ति, कृपा करें कि ध्यान धारणा के सौन्दर्य, समर्पण एवं आत्मसम्मान के माध्यम से सहजयोगिनियों के नारी सुलभ गुण प्रकट हों।

33. शारदा देवी के आपके गुण, सत्य, कला, संगीत एवं नाटक में निपुणता प्रदान करते हैं।

34. आपने महिलाओं को सच्ची शालीनता का गुण प्रदान किया है ताकि वे अपने परिवारों की देखभाल कर सकें तथा समाज को सुरक्षित रख सकें।

35. हे आदिशक्ति आप सती देवी के रूप में प्रकट हुई और राजधर्म की स्थापना हुई। जिसकी हम अभिलाषा करते हैं।

36. हे वागेश्वरी, आप ही महान कवियों तथा सन्तों को प्रेरणा देती है।

37. हे श्री आदिशक्ति, आपका वर्णन करना कवियों और सन्तों का कार्य है परन्तु अकुशलता के कारण वे अन्तरिक्ष पर रहस्य की एक शाखा लगाने का प्रयत्न करते हैं।

38. हे आदिशक्ति, आप पराशक्ति हैं, सभी शक्तियों से ऊपर।

39. हे आदिशक्ति, कृपा करके हमें और अधिक विनम्रता प्रदान करें ताकि आपकी महिमा की एक छोटी सी झलक हम भी प्राप्त कर सकें।

40. हे देवी, कृपा करके हमें भी सूफियों एवं जिज्ञासुओं सम बना दें जो कि हर क्षण आपके गुण-गान में मग्न रहते हैं।

41. आपकी महालक्ष्मी शक्ति भव सागर में रिक्ती को पूर्ण करती है ताकि उत्थान के लिए साधकों की कुण्डलिनी चढ़ सके।

42. है आदिशक्ति, हमें सहजयोग में लाने वाली जिज्ञासा प्रदान करने के लिए आपका कोटि-कोटि धन्यवाद। अब कृपा करके मानवता को अन्तिम निर्णय (Last Judgement) के अन्त तक ले आएं।

43. हे आदिशक्ति, हम याचना करते हैं कि आपका प्रेम विश्व भर के साधकों और

सन्तों की रक्षा करता रहे।

44. हे श्री आदिशक्ति आपका कार्य ही महानतम है। आप ही ने पीठों, चक्रों, प्रकृति, मानवता तथा इनके सूक्ष्म कार्यों की सृष्टि की। कृपा करें कि आपके कार्य की जटिलता हमें पूर्णतः विनम्र करे दें।

45. आपका प्रेम चैतन्य लहरियाँ फैलाने वाले बन्धन को शक्ति प्रदान करता है।

46. आपकी कुण्डलिनी शक्ति दिव्य स्वतन्त्रता प्रदान करती है। केवल यही वास्तविक स्वतन्त्रता है।

47. हमारे अन्दर से बिना किसी अवरोध के बहती रहें। जीवन्त चैतन्य लहरियां प्रदायक अपने फोटो द्वारा अन्य लोगों को चैतन्य देने में हमारी सहायता करें।

48. आपका महामाया स्वरूप हमें आपका सामीप्य प्रदान करता हैं तथा आपके अन्दर से प्रसारित होने वाली भयावह शक्ति से हमें बचाता है।

49. हे श्री आदिशक्ति, कृपा करके हमें अन्तर्दर्शन की गहन शक्ति प्रदान करें ताकि हम आत्मशोधक तथा आत्मचेतन बन सकें।

50. आप ही वो माँ है जिनकी इच्छा थी कि मानव ही सर्वशक्तिमान परमात्मा के दर्पण बने।

51. मानवता के पुनरुत्थान के लिए आपने सहजयोगियों में आत्मा के सुन्दर दर्पण कलात्मक रूप के बनाए हैं।

52. आपकी करुणा सर्वशक्तिमान परमात्मा के क्रोध के प्रकोप से हमारी रक्षा करती है।

53. माया के कारण मानव, जीवन के सिद्धांतो को भूल गया है। अब सहजयोग के माध्यम से मनुष्य श्री आदिशक्ति का स्मरण करता है और उनकी चैतन्य लहरियों को आत्मसात करता है।

54. कृपा करें कि आपकी विकास प्रदायी शक्ति स्वार्णीम युग के वांछित अस्तित्व को मानवता प्रदान करें।

55. आपने हमें मिथ्या-अभिमान ईर्ष्या, मोह, लोभ, झूठे तदातम्य और हिंसा के चंगुल से मुक्त किया है।

56 अन्तिम निर्णय के लिए आप पृथ्वी पर अवतरित हुई हैं।

57. आप संज्ञानात्मक विज्ञान एवं संवेदनशील क्षेत्र की स्वामिनी हैं।

58. मानव जिस चीज का संकल्प करते हैं उसका विकल्प करके आप उसके अहम् को नष्ट करती हैं। अपनी अंगुली के जरा से इशारे से आप हिटलर जैसे तानाशाह को समाप्त कर देती है।

59. सूक्ष्म विनोदमय शैली में आप अत्यन्त गहन शिक्षा देती हैं।

60. सहजयोगियों को आप कटु शब्दों से नहीं सुधारती, अपने गहन प्रेम तथा मृदुल स्नेह से ये कार्य करती हैं।

61. आप सभी धर्म-ग्रन्थों के सूक्ष्म अर्थ की व्याख्या करती हैं।

62. प्रत्यक्ष रूप से आप असत्य का अनावरण करती हैं।

63. भय नामकी चीज आपमें नहीं है और सहज योगियों को आप पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती हैं।

64. अपने बच्चों को आप प्रेम करती हैं और उनका सम्मान करती हैं ताकि सारी मानवता के लिए वे श्रेष्ठ आदर्श बन सकें। आपने सहजयोगियों को निष्पाप विनोदमयता एवं पूर्ण आनन्द का जीवन प्रदान किया है।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री आदिशक्ति नमो नमः।

श्री माताजी की कनाडा यात्रा (1999)

श्री माताजी का टोरोंटो में आगमन :-

यह खबर पाकर कि श्रीमाता जी अमरीका जाने से पूर्व टोरोंटो आएंगी, कनाडा के सहजयोगी हर्षमय आश्चर्य से भर गऐ थे। ये सुनना आनन्दमय था कि आदिशक्ति अपनी मंगलमय उपस्थिति से कनाडा को आशीर्वादित करेंगी। श्रीमाताजी ने कृपा करके टोरोंटो की सामूहिकता को सन्देश भेजा कि यद्यपि जन कार्यक्रम के लिए समय बहुत कम है फिर भी हमें परिणाम की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि परिणाम अपेक्षा से कहीं बढ़कर होंगे और इस बार हमेशा से अधिक जिज्ञासु इस कार्यक्रम में उपस्थित होंगे। पोस्टर छापे गए और टोरोंटो शहर और उसके आस पास के क्षेत्रों में लगाए गए। सभी मुख्य स्थानों पर पत्रिकाएं बाँटी गई। समाचार पत्रों में समाचार छापे गए और जाने माने लोगों को, राजनीतिक क्षेत्र के लोगों को भी, निजी रूप से आमंत्रित किया गया। उन्हें निजी रूप से टेलिफोन किए गए, फैक्स दिए गए और ई मेल किए गए। कनाडा की संघ सरकार के अधिकतर मंत्रियों को तथा राज्य सरकार के मंत्रियों को सूचना दी गई तथा टोरोंटो कार्यक्रम तथा आगे आने वाले वैकूवर कार्यक्रम के लिए आमंत्रित किया गया। जिस होटल में हम अपनी परमेश्वरी माँ को ठहराना चाहते थे, उसमें हमें कमरे भी मिल गए। होटल के मैनेजर ने अपने सम्माननीय अतिथियों को दूसरे कमरों में जाने के लिए कह दिया ताकि वे उस स्थान पर अपने बहुमूल्यतम और सम्माननीय अतिथि (श्री माता जी) को रख सकें। श्री माताजी के आने से पूर्व न केवल टोरोंटो में परन्तु ओन्टारियो राज्य में लगातार तीन दिन तक बारिश हुई। बारिश की बहुत आवश्यकता भी थी क्योंकि झील का स्तर नीचे जा रहा था जिसके कारण अधिकारी चिंतित थे। इस प्रकार विष्णु माया ने आदिशक्ति के स्वागत के लिए वातावरण को शुद्ध करके तैयार कर दिया और हम लोग उनके आगमन का बड़ी उत्सुकता पूर्वक इन्तजार कर रहे थे।

श्री माताजी टोरोंटो में 25 मई 1999 की शाम को पहुँची। हवाई पतन पर लगभग 150 योगी उनका स्वागत करने के लिए मौजूद थे अप्रवासी क्षेत्र में अपने सामान की प्रतीक्षा करते हुए श्री माता जी ने सात कस्टम अधिकारियों को आत्मसाक्षात्कार दिया जो इसके पश्चात्, जब तक श्रीमाताजी ने हवाई पतन छोड़ नहीं दिया, उनके साथ बने रहे। इतने अधिक योगियों को हवाई पतन पर देखकर श्री माताजी बहुत प्रसन्न हुए और कहा कि कनाडा में सहज योग कुछ बढ़ा है तथा तेजी से फैल रहा है। फ्रैंकफर्ट हवाई पतन पर प्रेम पूर्वक आए जर्मनी के सहजयोगियों का भी उन्होंने वर्णन किया। टोरोंटो आते हुए फ्रैंकफर्ट पर उनका जहाज रुका था। तब उन्होंने स्वागत के लिए आए सभी सहजयोगियों से पुष्प स्वीकार किए और उन्हें आशीर्वाद दिया। वहां जब वे अपने सिंहासन पर बैठी हुई मुस्कुरा रही थीं तो हमारे हृदय आनन्द से झूम रहे थे और हमारी आत्माएं नृत्य कर रही थीं।

टोरोंटो विश्वविद्यालय के दीक्षांत सभागार में जन कार्यक्रम हुआ। जनकार्यक्रम का घटनाक्रम, जैसे स्पष्ट रूप से श्री माताजी ने निर्धारित किया था, सभी कुछ वैसे ही एक गीत की तरह से घटित हुआ। सभागार में लगभग एक हजार उपस्थित लोग उत्सुकता पूर्वत कार्यक्रम आरम्भ होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। लगभग साढ़े सात

बजे कार्यक्रम आरम्भ हुआ। इसका श्रेय युवाशक्ति को है जिन्होंने काफी परिश्रम करके मंच को समय पर तैयार किया। स्टीवन डे ने सरोद पर राग यमन बजाया और दर्शकों को ध्यान मुद्रा में ले जाकर उनका मन मोह लिया। तब दस मिनट में एक सहजयोगी ने प्रभावशाली ढंग से सहजयोग का परिचय दिया और सूक्ष्म तन्त्र तथा चक्रों के विषय में बताया। आश्चर्य की वात्त है कि ज्यों ही उसने अपना भाषण समाप्त किया अपनी उपस्थिति द्वारा श्री माताजी ने हम पर कृपा वर्षा की। उनका स्वागत करने के लिए सभी लोग खड़े हो गए।

वह संध्या श्री माताजी की थी। वे दिव्य रूप में थीं। अत्यन्त सुगम एवं साधारण तरीके से उन्होंने सहजयोग के लाभ बताए। उनकी शैली इतनी विनोदमय थी कि सभी ने हंसते हंसते इसे स्वीकार किया। पूरा प्रवचन करुणा से आते-प्रोत था और उनकी आवाज से परमेश्वरी माँ का प्रेम एवं सुहृदयता छलक रही थी। उन्होंने, निःसन्देह, साक्षात श्री सान्द्रकरुणा के रूप में अपनी अभिव्यक्ति की। बाद में होटल के कमरे में उन्होंने कहा कि जिस दिशा में अमरीकन समाज जा रहा है वे उसके लिए चिन्तित हैं। उन्होंने कहा कि केवल सहजयोग ही उनकी सभी समस्याओं का समाधान है।

श्रीमाताजी ने श्रोताओं से प्रश्न पूछने के लिए कहा क्योंकि उन्हें लगा कि वे बुद्धिमान लोग थे। फिर भी उन्होंने अनुरोध किया कि केवल प्रासंगिक प्रश्न ही पूछे जाएं। एक बार फिर श्री माताजी ने निरस्त कर देने वाली स्वाभाविकता एवं सहजतापूर्वक अपनी विनोदमय शैली में प्रश्नों के उत्तर दिए। यह पूछे जाने पर कि वे कौन है? उन्होंने उत्तर दिया, ''मैं कौन हूँ इसकी चिन्ता करने के स्थान पर आप यह समझने का प्रयत्न क्यों नहीं करते कि आप कौन है? स्वयं को जान लेने के पश्चात् आप समझ जाएंगे कि मैं कौन हूँ?''

प्रश्नोत्तर सत्र के पश्चात् (कुछ अन्य प्रश्नोत्तर इस लेख के अन्त में दिए गए हैं। श्रीमाताजी ने कहा कि अब समय है कि सभी लोग आत्मसाक्षात्कार ले लें। इसके पश्चात् जो घटित हुआ अधिकतर सहजयोगियों के लिए वह असाधारण अनुभव था। पूरे सभागार में हमने शीतल समीर का अनुभव किया और देखा कि श्रीमाताजी के पीछे लगा हुआ झण्डा (Banner) इस समीर (हवा) से लहरा रहा था। श्रीमाताजी ने श्रोताओं को बताया कि उन्हें श्रोताओं से आती हुई शीतल वायु महसूस हो रही है। क्या कृपा थी! टोरोंटो वास्तव में 'शीतल' हो गया था।

श्री माताजी ने भजन गाने वालों से जोगवा गाने के लिए कहा और श्रोताओं को इसका अर्थ बताया। उन्होंने श्रोताओं से अनुरोध किया कि तालियाँ बजाकर वे भी साथ दें क्योंकि ऐसा करने से चैतन्य लहरियाँ बढ़ती है। सभागार आनन्द से परिपूर्ण था और श्री माताजी ने भी तालियाँ बजाने में साथ दिया। भजन आरोह की स्थिति में पहुँच गया और उसके माध्यम से हमारी चैतन्य लहरियाँ शिखर पर पहुँच गई। एक दो मिनट के लिए पूर्ण स्तब्धता फैल गई। तत्पश्चात् श्री माताजी ने सभी को आशीर्वाद दिया उनके प्रस्थान के समय सभी लोग खड़े हो गए।

अगले दिन श्री माताजी ने तमिल दूरदर्शन से मिलने की सहमति दी। उन्होंने उनसे डेढ़ घण्टे तक बातचीत की। वे श्रीमाताजी पर एक वृत्तचित्र बनाना चाहते हैं। एक दिन पूर्व हुए जन कार्यक्रम को भी उन्होंने फिल्माया था और आत्मासाक्षात्कार भी प्राप्त किया था। श्री माताजी के प्रति वे अत्यन्त नतमस्तक थे और साक्षात्कार (Interview) के समय वे उनके श्री चरणों में

बैठे रहे। उत्तरी अमरीका तथा दक्षिणी अमरीका के उन क्षेत्रों में, जहाँ दक्षिण भारत के तमिलनाडू राज्य से आए तमिल जाति के गैर इसाई लोग रहते हैं, इस साक्षात्कार का प्रसारण किया जाएगा। इसके पश्चात् श्री माताजी हवाई पतन के लिए रवाना हो गईं। उन्होंने थोड़े से शब्द कहे और अभी के लिए अलविदा कही। अपनी शाश्वत् सुन्दर मुस्कान के साथ परमेश्वरी माँ न्यूयॉर्क में प्रतीक्षा करते हुए अपने बच्चों से मिलने के लिए चल पड़ी।

लगभग सौ लोगों ने पहले अनुवर्ती कार्यक्रम में भाग लिया। उनकी सच्चाई और दिलचस्पी बहुत ही आश्चर्य चकित कर देने वाली थी। चार भाग वाले अनुवर्ती कार्यक्रम की योजना बनाई गई थी जिसमें, साक्षात् परमात्मा के सम्मुख हाल ही में साक्षात्कार प्राप्त किए, अपने नए भाई-बहनों को जीवन के गहन अर्थ को खोजने के लिए हमने उनका प्रेम पूर्वक पथ प्रदर्शन करना था।

बोलो जगन्माता श्री निर्मला देवी की जय

-आशीष प्रधान टोरोंटो

श्री माताजी वैंकूवर में - वैंकूवर नगर मे अब 2500 नव साक्षात्कार प्राप्त लोग हैं। परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के दो जन कार्यक्रमों उपनगर, सर्रे में उनके घर में एक भेंट तथा होटल के कमरे में पत्रकार सम्मेलन के पश्चात् हमारा नगर उनके सूक्ष्म चित्त दृष्टि पड़ने के कारण भली भांति चैतन्यित एवं आशीर्वादित हो गया। अट्ठारह वर्ष पूर्व उनकी पहली यात्रा से लेकर अब तक ऐसा कभी नहीं हुआ था। 26 जून शनिवार को शिकागो से आकर श्री माताजी ने आन्तरिक बन्दरगाह पर बने शहर के मुख्य सम्मेलन केन्द्र पर जन कार्यक्रम किया। एक्सपो 86 के लिए कनाडा के मंडप के रूप में बने इस एतिहासिक मण्डप में श्री माताजी ने हमारे नगर के साधकों को सम्बोधित किया। टोरोंटो, वाशिंगटन और न्यूयॉर्क की तरह से श्री माताजी ने यहाँ भी श्रोताओं से प्रश्न पूछने के लिए कहा ताकि आत्मसाक्षात्कार से पूर्व उनकी सारी मानसिक उत्कंठाओं को शान्त किया जा सके। सच्चे साधक की निष्कपटता से एक व्यक्ति ने प्रश्न किया, ''जीवन का लक्ष्य क्या है,'' ''अत्यन्त साधारण है,'' श्रीमाताजी ने उत्तर दिया ''दिव्य बन जाना''

अपनी अन्तर्वेदना तथा साधना के दर्द को प्रकट करते हुए एक अन्य साधक ने प्रश्न पूछे। उनकी ईमानदारी के लिए श्रीमाताजी ने सराहना की। पहली पंक्ति में बैठे हुए एक युवा लड़के ने जानना चाहा कि शैतान हमारे अन्दर किस प्रकार आ जाता है। एक अन्य व्यक्ति ने मंच के पीछे के पर्दे पर बने चित्र के विषय में पूछा? श्रीमाताजी ने कहा कि वह तो केवल सजावट के लिए था। श्रीमाताजी ने चेतावनी दी, ''आप सभी कुछ देखते हैं। परन्तु वास्तविकता को क्यों नहीं देखते?'' जन-कार्यक्रम के पश्चात् श्री माताजी ने कार द्वारा नगर का भ्रमण किया-स्टेनले पार्क और उत्तरी तट पर्वत ताकि शाम की तेज चैतन्य लहरियों को फैला सके। थोड़ी देर सोने के पश्चात् रविवार प्रातः दूसरे जन कार्यक्रम के लिए बर्नबी (Burnby) मन्दिर गईं। शुद्ध हिन्दी में बोलते हुए उन्होंने यहाँ उपस्थित श्री कृष्ण भक्तों को बताया कि उनके लिए तो आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना सुगम होना चाहिए। अत्यन्त श्रद्धा तथा सम्मान-पूर्वक श्री माताजी का परिचय करते हुए पुजारी ने कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए मार्ग प्रशस्त किया। बर्नबी से श्री माताजी सर्रे स्थित अपने घर आईं। यह भी एक सहजयोग आश्रम ही है। यहाँ उन्होंने सहजयोगियों का स्वागत किया। दोपहर का खाना खाकर आराम किया।

शाम को होटल वापिस जाकर पाँच संवाददाताओं के लिए एक संवाददाता सम्मेलन हुआ। नगर की लोकप्रिय पत्रिका (Common Ground) कॉमन ग्राऊंड के सम्पादक भी इन पांच में से एक थे। राष्ट्रीय धार्मिक केबल चैनल विज़न (Vision) के कर्मी दल के सदस्य और वैंकूवर भारतीय प्रजाति के समाचार और दूरदर्शन के सदस्य श्रीमाताजी के सम्मुख फर्श पर जूते उतारकर बैठे हुए थे। अगली सुबह श्रीमाताजी की स्वीकृति लेने तथा उसकी अशुद्धियाँ दूर करने के लिए उन्हें एक लेख पेश किया गया। इस लेख की भाषा ऐसी थी मानों किसी सहजयोगी ने लिखा हो।

हमारे नगर पर श्रीमाताजी की कृपा दृष्टि से हम अत्यन्त आशीर्वादित महसूस कर रहे हैं। हवाई पतन पर श्री माताजी के आगमन और प्रस्थान के समय हर एक सहजयोगी व्यक्तिगत रूप से उन्हें पुष्प अर्पण कर सकता था। जब वो सर्रे आश्रम में गई तो हर एक को उनके चरणों में प्रणाम करने का, उन्हें उपहार देने का या अपनी समस्या के विषय में बातचीत करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने सभी बच्चों को समय दिया। उन्होंने कहा कि परम चैतन्य इतना प्रसन्न है कि वे (श्रीमाताजी) घर को चैतन्य लहरियों से भर देना चाहते हैं। इस प्रकार हम धन्य हुए।

<u>प्रश्नोत्तर</u>

वैंकूवर यात्रा में श्री माता जी ने अपने होटल के कमरे में एक संवाददाता सम्मेलन किया। चार संवाददाता उपस्थित थे। ये कॉमन ग्राऊंड पत्रिका, यू मैगजीन, द लिंक न्यूज पेपर और वीजन ऑफ फन टेलिविजन के कार्यक्रमों के प्रतिनिधि थे। इसका एक छोटा सा उद्धरण निम्न लिखित है।

श्रीमाताजी : आप देखिए, मनुष्यों के साथ समस्या ये है कि वे पशु अवस्था में विकसित हुए हैं। अतः मैं सोचती हूँ कि मानव रूप में ये विकास पूर्ण नहीं हैं। जो भी हो, ये दुर्गुण जो अभी तक हमारे अन्दर, हमारे व्यक्तित्व में बने हुए हैं, ये वंशानुगत हैं। हम बहुत अधिक सोचते हैं, बहुत अधिक चीजें इकट्ठी करते है और हमारे अन्तःस्थित ज्ञान भी बदलता रहता है, जैसे भोजन आदि के विषय में, और हम एक प्रकार से लोभी व्यक्ति बन जाते हैं। हमारे अत्यन्त धन लोलुप हो जाने के कारण पूर्ण प्रणाली एकदम से बदल जाती है। ये दुर्गुण अभी तक भी हममें बने हुए हैं और उसके साथ-साथ ईर्ष्या और आक्रामकता का गुण भी हमारे अन्दर विद्यमान है। ये सभी कुछ हममें वंशानुगत हैं। आत्मसाक्षात्कार के परिणामस्वरूप आप एक ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जो बिना प्रतिक्रिया किए चीजों को देख सकता है उनपर दृष्टि रख सकता हैं। मेरे विचार से वह महानतम लाभ है।

प्रश्न : क्या आपने गाँधीजी के साथ कार्य किया?

श्री माताजी : इस प्रकार मैंने उनके साथ कार्य नहीं किया। उस समय मैं सात साल की नन्ही बालिका थी, मैं उनके साथ रही और वो मेरे विषय में जान पाए। आत्मसाक्षात्कारी होने के कारण वे मुझे पहचान गए। परन्तु महात्मा गांधी बहुत अधिक अनुशासन बद्ध थे इसलिए लोग उनके इस गुण को (आत्मसाक्षात्कारी होना) न समझ सके। वे अत्यन्त आध्यामिक व्यक्ति थे और बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। उनके साथ मैंने एक ही कार्य किया, कभी-कभी मैं उनका क्रोध शान्त किया करती थी, उनका मनोरजन करती थी। वे मुझसे पूछा करते थे कि वे भजन किस प्रकार लिखें। भजनावली में सारे मन्त्र लिखे हुए थे, वे इसे एक क्रम से लिखना चाहते थे। भिन्न चक्रों के अनुसार मैंने उन्हें बताया कि

आपको यह चक्र जागृत करने होंगे।

प्रश्न : क्या हमारा अस्तित्व एक है।?

श्रीमाताजी : सभी लोग जुड़े हुए हैं परन्तु आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति इस सम्बन्ध को महसूस कर सकते हैं, जो आत्म साक्षात्कारी नहीं हैं वे इसे नहीं समझ सकते। वे सब एक ही व्यक्ति हैं, एक ही आध्यात्मिक अस्तित्व के अंग प्रत्यंग। इसे हम सर्वशक्ति मान परमात्मा कह सकते हैं। इस बात का ज्ञान हमें होना चाहिए। अपनी चेतना में हम नहीं आ पाए है। अभी तक प्रवेश नहीं कर पाए हैं। एक बार जब ये स्थिति आ जाएगी, तब आप जानते हैं कि आप भिन्न व्यक्तित्व के हो जाएेगे।

प्रश्न : ये सारी चीजे कब कार्यान्वित होगी?

श्रीमाताजी : यह सब लोगों की इच्छा पर निर्भर करता है। मेरी इच्छा तो ये है कि यह कल घटित हो जाए। मूर्खतापूर्ण चीजों में हम अपना जीवन क्यों बर्बाद करें। हमें होश में आ जाना चाहिए। मैं यही चाहती हूँ। मैं तो यात्राएं करती रहती हूँ, भाषण देती हूँ, बातचीत करती रहती हूँ। परन्तु सत्ता पर आसीन लोगों को भी यह बात समझनी चाहिए।

प्रश्न : आप परमात्मा तक किस प्रकार पहुँचते हैं? दूसरे शब्दों में क्या यह परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग है?

श्रीमाताजी : हाँ, नि:सन्देह ऐसा है। यह निर्वाण है। 26 जून 1999 शनिवार के दिन परम पूज्य माताजी श्री निर्मलादेवी ने वैंकूवर में एक जन कार्यक्रम किया इसमें उन्होंने श्रोताओं के प्रश्न आमंत्रित किए।

प्रश्न : जीवन का लक्ष्य क्या है?

श्रीमाताजी : दिव्य बननां, सीधी सी बात है। यह ऐसा प्रश्न है जो हमारे अन्दर महसूस किया जाना चाहिए। मानव जीवन का लक्ष्य क्या है? दिव्य बनना और परमात्मा का अंग प्रत्यंग बनना। मानलो आप पिता हैं। आप अपने बच्चे को क्या बनाना चाहेंगे। प्रसन्नचित, आनन्दमय और जिम्मेदार व्यक्ति। जब आप अपने बच्चे को ऐसा बनाना चाहते है तो आपके परमपिता आपसे क्या आशा करते हैं? वे भी चाहते है कि आप प्रसन्न एवं आनन्दमय व्यक्ति बने। अज्ञानवश आप ऐसे नहीं है। अत: वे अज्ञान को दूर करना चाहते है। आपके जीवन का यही लक्ष्य है

प्रश्न : कोई यदि तनाव की स्थिति में है और उसके पास ध्यान धारणा करने का, सामूहिकता में जाने का अवसर भी नहीं है, तो ऐसी कौन सी विधि है जिससे वे तुरन्त अपनी चैतन्य लहरियों को बढ़ा सकें ताकि परमात्मा तथा, समाज के दृष्टिकोण से समस्याओं का समाधान देख सके ?

श्रीमाताजी : जैसा मैंने आपको पहले बताया है ये आपका मौलिक अधिकार है। यदि हालात आपके पक्ष में नहीं है फिर भी चीजे कार्यन्वित होती हैं, स्वत: ही कार्यान्वित होती है। आपको सारे अवसर प्राप्त हो जाते हैं। मैने ऐसे बहुत से लोगों को देखा है जिनको ऐसी समस्याएं थीं। परन्तु इनके समाधान के लिए वे कार्य करते हैं। परमात्मा के प्रेम की शक्ति पर विश्वास करें और देखें कि कितनी सुन्दरता पूर्वक यह कार्य करती है। ठीक है? परमात्मा आपको धन्य करें।

वैंकूवर के हिन्दू मन्दिर में एक व्यक्ति श्री माताजी को आमंत्रण देता है कि अगले दिन आकर कार्यक्रम करें। उसके उत्तर में श्रीमाताजी कहती है: आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आप देखें कि मन्दिर, गुरुद्वारे, चर्च, ये सभी आध्यात्मिकता सिखाने के लिए हैं। इसका यही अन्त नहीं हो जाता। अन्त क्या है? इसका अन्त है स्वयं को पहचाननां, आध्यात्मिकता सम्पन्न होना। मैं आपको बता रही हूँ कि आपको अपने बौद्धिक व्यक्तित्व से ऊपर उठना होगा और इसके लिए कुण्डलिनी जागृति प्राप्त करनी होगी।

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

उद्धारक स्वस्तिक

卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐

स्वस्तिक शब्द का अर्थ क्या आपने कभी किसी पुस्तकालय में देखा? इस लेख को लिखते हुए न्यूयॉर्क पब्लिक लायब्रेरी के संदर्भ पुस्तकाध्यक्ष से स्वस्तिक शब्द पर कोई पुस्तक देने के लिए जब कहा गया तो उसने उत्तर दिया, 'क्या आप द्वितीय विश्व युद्ध पर खोज कर रहे हैं?' जब उसे बताया गया कि स्वस्तिक हिन्दू तथा अन्य धार्मिक परम्पराओं में अत्यन्त सम्माननीय प्रतीक है, तो उसने लेखक को पुस्तकालय के कला विभाग में भेज दिया; वहाँ पर हालात कुछ बेहतर थे।

पुस्तकाध्यक्ष ने कहा, ''ओह! आप श्री गणेश और स्वस्तिक में दिलचस्पी ले रहे हैं। वे श्री शिव और पार्वती के पुत्र हैं। उनके विषय में यहाँ पर एक संदर्भ है। स्वस्तिक क्योंकि सहज योग तथा मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग है अतैव इसका इतिहास और अर्थ समझा जाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तृतीय जर्मन साम्राज्य की नकारात्मकता ने स्वस्तिक के विषय में जन चेतना को प्रभावित किया है फिर भी स्वस्तिक के विषय में शुद्ध सत्य को कभी परिवर्तित नही किया जा सकता। यह मानव का प्राचीनतम प्रतीक है और इसका आकार वास्तव में श्री गणेश की शक्ति प्रदान करता है। स्वस्तिक की शक्तियाँ अत्यन्त शक्तिशाली एवं पवित्र हैं और उनकी उपस्थिति का आभास कराती हैं।

स्वस्तिक शब्द संस्कृत का है, जिसका उद्भव स्वस्ति शब्द से हुआ है अर्थात् सुख, शांति। सु अर्थात अच्छा और अस्ति अर्थात् होना। जिन संस्कृतियों ने स्वस्तिक का सम्मान किया और इसका मंगलमयता के प्रतीक के रूप में विस्तृत रूप से उपयोग किया उनकी अधूरी सूची नीचे दी जा रही है। यह इस प्रकार है: भारत, चीन, यूनान के मैसिनियन, आयरलैण्ड के सेल्फस, प्राचीन बर्तानिया, स्कैण्डेनेविया, मध्य पूर्व के प्राचीन इसाई, मूल अमरीकन, रूस, जापान और जर्मनी।

सच्चे स्वस्तिक, घड़ी की सुई की दिशा में, की उपस्थिति चमत्कारिक गुणों को प्रदान करती है। यह बाधा निवारक का कार्य करता है और इसीलिए श्री लंका से जाने वाले जहाजों पर यह चिन्ह बनाया जाता था ताकि श्री राम की विजय को विश्वस्त कर सकें। चीन में श्री बुद्ध के चरण कमलों पर पत्थरों में स्वस्तिक चिन्ह बनाया जाता था। वहाँ पर इसे वांतजुते नाम दिया गया और यह हितैषी समाज, जीवन की पूर्णता और बुद्ध के हृदय का प्रतीक माना जाता है।

वास्तव में स्वस्तिक उन सभी स्थानों पर पाया जाता है जहाँ मानव गया। प्राचीन भारतीय गुफाओं की दीवारों पर हजारों स्वस्तिक चिन्ह चित्रित किए गए हैं और आज भी ग्रामीण महिलाएं अपने दरवाजों और घर की दीवारों पर स्वस्तिक चिन्ह बनाती है। प्राचीन यूनानी सिक्कों, रोमन चित्रकारी तथा प्राचीन यूरोप की सिलाई पर यह निशान बनाया जाता है। शताब्दियाँ बीच में बीतने के साथ-साथ स्वस्तिक की समझ लोगों के जीवन से दूर होती चली गई। पवित्रता को रोजमर्रा के जीवन की गतिविधियों से पृथक

कर दिया गया फिर भी घरेलू वस्तुओं, कपड़ों, इमारतो के खम्भों पर मंगलमयता के चिन्ह के प्रतीक के रूप में स्वस्तिक दिखाई देता था जो कि भूतकाल की अपेक्षा कम चेतन था। सीधे, घड़ी की सुई की दिशा में ही, बने स्वस्तिक में ही चैतन्य लहरियाँ देने का गुण है। उल्टी दिशा में बनाए गए स्वस्तिक मंगलमय नहीं होते। इनका उपयोग आसुरी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए तांत्रिकों ने किया। बहुत सी संस्कृतियों ने स्वस्तिक का उपयोग सजावट के प्रतीक के रूप में उल्टा या सीधा किया क्योंकि लोगों को चैतन्य लहरियों को ज्ञान बहुत कम था और उनके चक्र कुण्डलिनी के प्रति संवेदन विहीन थे। यह जानकर हैरानी होती है कि अन-चाहे स्वस्तिक के उल्टी दिशा में बनाए जाने के कारण और उसके उपयोग से पूरे समाज परमात्मा को रुष्ट करने के कारण पतन को प्राप्त हुए हैं।

प्राचीन इसाईयों ने स्वस्तिक की तुलना ईसा-मसीह और सूर्य से की। हम बाइबल के न्यू टेस्टा-मेन्ट में जॉन के रहस्योद्घाटन नामक अध्याय में चार देवदूतों का वर्णन है। क्रूस सम बने प्रचण्ड चक्र पर ये सभी खड़े हैं और चारों दिशाओं में से एक-एक दिशा को ये मुँह किए हुए हैं। पाश्चात्य चित्रकला के माध्यम से यह श्री गणेश के देवी गुणों की व्याख्या हो सकती है।

प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व के देशों के दार्शनिकों की स्वस्तिक के विषय में सूझ-बूझ अत्यन्त सकारात्मक थी। उन्होंने इसे ईसा-मसीह के प्रतीक तथा प्रगल्भ विकास का प्रतीक माना। चारों दिशाओं के प्रतीक के रूप में भी उन्होंने स्वस्तिक को लिया तथा पशु अवस्था से मानव अवस्था और मानव अवस्था से दिव्य अवस्था तक विकास माना। वे न जानते थे कि श्री गणेश-गणेश और ईसा-मसीह एक ही सिद्धान्त के दो पक्ष थे तथा ईसामसीह ही के क्रूस से, जो सत्य न था, जुड़े हुए थे।

सहजयोग के माध्यम से हम जान जाते है कि श्री गणेश के गुण, अबोधिता एवं विवेक, सूक्ष्म स्तर पर जीवत कोषाणुओं में निवास करते है। जीवन सृजन पिण्ड के सूक्ष्म अणुओं में भी, जिनका आकार कुण्डलित होता है, स्वस्तिक प्रतीक होता है। आणविक स्तर पर स्वस्तिक कार्बन के अणुओं में दिखाई पड़ता है। सहजयोगी वैज्ञानिकों के शोध परिणामों को श्री माताजी ने स्वीकार किया कि स्वस्तिक तथा ओंकार, अल्फा और ओमेगा, आदि और अन्त के प्रतीक हैं और इन्हें कार्बन के अणुओं से बने भाग के रूप में देखा जा सकता हैं।

स्वस्तिक केवल प्रतिनिधित्व मात्र ही नहीं है। यह अपने आप में जीवन की उपस्थिति है। आत्मासाक्षात्कार से पूर्व साधक सन्देशों और प्रतीकों में चैन खोजता है, आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् हम प्रतीक की कृपा सीधे अपने चक्रो पर महसूस करते है।

विशुद्धि की भूमि पर मूल अमरीकन लोगों ने पृथ्वी तत्व की शक्ति को महसूस किया। दक्षिणी, पश्चिमी अमरीका के कोएवलों लोगों के पूर्वजों ने अंजाजियों में स्वस्तिक के आकार अपने सुन्दर मिट्टी के बर्तनों पर बनाए। आज भी होपी जो कि उनकी सन्ताने हैं पूरे दक्षिण पश्चिम के दस हजार वर्षों के इतिहास में प्राचीन देशान्तरण की कहानियाँ सुनाते हैं। होपी लोगों का विश्वास है कि मानव रूप में वे पृथ्वी माँ के गर्भ से सीधे अवतरित हुए थे और उन्होंने चारों दिशाओं में देशान्तरण किया। जिस प्रकार सीधे चक्र में स्वस्तिक बनाया जाता है, उनका विश्वास है कि स्वस्तिक का ये आकार

उनकी यात्रा को धार्मिकता प्रदान करता है। यह उभाड़ उनके लिए नए विश्व में प्रवेश तथा एक ऐसे विश्व में वापिसी की इच्छा का सृजन करता है जहाँ द्वार से सिर के तालू भाग तक खुला हो अर्थात माँ में वापिसी, ये उभाड़ इस चीज का प्रतीक था।

श्री गणेश की भूमि आस्ट्रेलिया में महान उबरू विराजमान हैं जिन्हें अय्यर की चट्टान के नाम से भी जाना जाता है। यह लाल रंग की एक बहुत बड़ी चट्टान है जो कि स्वयंभु श्री गणेश है। एक प्राकृतिक भौगोलिक संस्था जिससे चैतन्य लहरियाँ निकलती है। अय्यर की चट्टान वहाँ के मूल कबीलों के लिए पावन स्थल था। वो समझते थे कि ये विशाल पत्थर से बनी संरचना जीवित है। वैज्ञानिकों ने इस चट्टान को प्राचीनतम जीवाश्म अमीबा जीवन संभवत: जीवन का ही चिन्ह माना है। इस चट्टान का रंग लाल है और इसमें चुम्बकीय तत्व हैं।

विकास के मूल में विद्यमान श्री गणेश के चुम्बकीय तथा विद्युत चुम्बकीय गुणों के विषय में श्री माताजी बताती है : ''भौतिक स्तर पर हम इसे विद्युत चुम्बकीय कह सकते हैं परन्तु वास्तव में यह गणेश की शक्ति है जो इस स्तर पर विद्युत चुम्बकीय है। यहाँ इसका उत्थान और उसकी बढ़ोतरी होनी आरम्भ हो जाती है। इस प्रकार विकास की भिन्न बढ़ोतरी हम देखते हैं। मानव में जैसे आप जानते हैं, यह मंगलमयता, पावनता और विशेष रूप से अबोधिता के रूप में विद्यमान है।" चतुर्भुज गजानन श्री गणेश आकार में स्वस्तिक सम है। श्री गणेश के भजन में उनकी भुजाएं और हाथ प्रतिबिम्वित हैं। श्री विनायक के रूप में उनकी स्तुति की गई है। ''उनकी चार पावन भुजाएं है। आशीर्वाद देता हुआ हाथ है। रस्सी तथा अंकुश उनके हाथ में है और अपनी चौथी भुजा से वे अपने साधकों को भोजन भेंट कर रहे हैं। **अंकुश आध्यात्मिक उत्थान का प्रतीक है, रस्सी कष्टों से बचाव है।, अभयमुद्रा में उठा हाथ आशीर्वाद दे रहा है और भोजन लिए चौथी भुजा प्रसाद का आशीर्वाद है। ये सभी मिलकर अबोधिता का प्रतिनिधित्व करते हैं और प्रणव प्रदान करते हैं**- ''यही वक्त है जब विद्युत चुम्बकीय शक्तियाँ गणेश तत्व से ऊर्जा प्राप्त करती है।'' श्री गणेश के ये प्रतीकात्मक पक्ष प्रणव प्रदान करने में और चैतन्य लहरियों को उत्पन्न करने में सहकारी कारण बनकर सहायक होते हैं। (श्री गणेश पूजा कबैला 19 सितंबर 1999)

तो हिटलर की आसुरी इच्छाओं के कारण श्री गणेश का स्वस्तिक किस प्रकार विक्रत हो गया। श्री माताजी बताती हैं कि हिटलर तिब्बत के बौद्धों से बहुत प्रभावित था और ये बौद्ध-लोग तान्त्रिक विद्याओं में फँसे हुए थे। उसे जब पता चला कि इस प्रतीक में शक्ति है तो उसने इसका उपयोग जर्मन संस्कृति के पुनरुत्थान के प्रतीक के रूप में किया ताकि वह अपनी आसुरी इच्छाओं को और कार्यो को न्यायोचित ठहरा सके। इतिहास में एक अन्य स्थान पर रोमन साम्राज्य में स्वस्तिक चिन्ह का उपयोग अपने प्रभुत्व प्रदर्शन के रूप में किया। रोम के ध्वजावाहक इसे उठाया करते थे। परन्तु जिस प्रकार नाज़ियों के साथ हुआ ऐसी गलतियों पर अच्छाई की विजय होती है। जिस प्रकार श्री माताजी हमें स्मरण करती हैं कि ईसा-मसीह की मृत्यु के जिम्मेदार रोमन लोग थे। इसके पश्चात् उनका साम्राज्य दुर्बल हो गया। यह सच्चाई है कि भारत से उनके व्यापार व्यवहार के मध्य वे समाज के प्रतीक के रूप में स्वस्तिक चिन्ह से परिचित हुए। परन्तु रोमन लोगों ने इसका उपयोग

उल्टी दिशा में किया।

वर्ष 1998 में जर्मनी में हुई श्री हनुमान पूजा में श्री माताजी ने हनुमान जी के विषय में बताया तथा जर्मनी के दाईं ओर के देवदूत सम गुणों का भी वर्णन किया। दूसरे विश्व युद्ध में श्री हनुमान ने हिटलर के साथ एक चालाकी की। आरम्भ में नाजी पार्टी ने अपने ध्वज पर स्वस्तिक का प्रयोग सीधी दिशा में किया। श्री हनुमान ने उस स्टेनसिल को इस ढंग से बना दिया कि नाजियों ने उसे दूसरी ओर से उपयोग करने का निर्णय किया। इस प्रकार से श्री गणेश और श्री हनुमान ने हिटलर को युद्ध जीतने से रोका और इस प्रकार पूरा विश्व उनके आसुरी प्रयासों से बच गया।

सदियों की नाजी नकरात्मकता के कारण सभाओं में नए साधकों के मन में स्वस्तिक के विषय में पूर्वविचार हो सकते हैं। द्वितीय विश्व युद्ध की यादों के कारण पश्चिमी संवाददाता भी स्वस्तिक के अर्थों के विषय में मूल भ्रम उत्पन्न करते हैं। आज भारत में स्वस्तिक राजनीतिक चुनावों और भारतीय समाज का सकारात्मक रूप से प्रतिनिधित्व करता है। हाल ही में 1930 के दशक में अमरीका के आस-पास की सरकारी इमारतों पर जीवन एवं शुभ इच्छा के प्रतीक के रूप में स्वस्तिक चिन्ह बनाया जाता था। केवल पिछले पचास वर्षों से ही इससे ध्यान हट गया है।

स्वस्तिक के गहन पावन रहस्य के अर्थ एवं शक्ति के विषय में बने हुए भ्रम को सहज-योग दूर कर रहा है। श्री गणेश का स्वस्तिक अखण्ड एवं पवित्र है तथा इतिहास और समय से परे है। सहजयोग के माध्यम से इसका जनसम्मान पूर्णतः पुनर्स्थापित हो जाएगा।

ॐ त्वमेव साक्षात् श्री गणेश साक्षात् श्री आदि शक्ति माताजी श्री निर्मला देव्यै नमो नमः

श्री हनुमान पूजा

फ्रैंकफर्ट, 31 अगस्त 1990

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

मानव अस्तित्व में श्री हनुमान जी की महत्वपूर्ण भूमिका है। निरन्तर हमारे स्वाधिष्ठान से मस्तिष्क तक चलते हुये वे हमारी भविष्य की योजनाओं या मानसिक गतिविधियों के लिये आवश्यक मार्गदर्शन तथा सुरक्षा प्रदान करते हैं। जर्मनी एक ऐसा देश है जहाँ के निवासी अत्यन्त चुस्त तथा उद्यमशील हैं। अपने शरीर का वे बहुत प्रयोग करते हैं और अत्यन्त यान्त्रिक भी हैं। श्री हनुमान जी से देवता का, जो कि बन्दरसम उन्नत शिशु हैं, निरन्तर मानव के दायें भाग में दौड़ते रहना अत्यन्त आश्चर्यजनक है। मानव के अन्तस्थित सूर्य तत्व को शान्त तथा कोमल बनाए रखने के लिए उनसे कहा गया। जन्म के समय ही उनसे सूर्य को नियन्त्रित करने के लिए कहा गया, अत: शिशु सुलभ स्वभाव से उन्होंने सोचा कि सूर्य को खा ही क्यों न लिया जाये? यह सोचते हुये कि पेट के अन्दर सूर्य को अधिक अच्छी तरह से नियंत्रित किया जा सकता है, उन्होंने विराट रूप धारण करके सूर्य को निगल लिया।

मानव की दायीं तरफ को नियन्त्रित रखने के लिए उनके बाल-सुलभ आचरण का उपयोग उनके चरित्र की सुन्दरता है। दाहिनी तरफ के लोगों को प्राय: बच्चे उत्पन्न नहीं होते हैं। अत्यन्त उद्यमी लोगों को यदि बच्चे हो भी जायें तो भी बच्चों के लिए समय अभाव के कारण ऐसे माता-पिता को बच्चे पसन्द नहीं करते। अत्यन्त कठोर होने के कारण ऐसे लोग सदा बच्चों पर चिल्लाते रहते हैं, और उनकी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार बच्चों से व्यवहार करें। कभी कभी तो ये लोग यह सोचते हुये "मुझे तो यह प्रेम प्राप्त नहीं हुआ कम से कम मैं इसे अपने बच्चों को तो दे दूँ" अपने बच्चों के प्रति अत्यन्त आसक्त हो जाते हैं। इन नितांत उग्र स्वभाव के व्यक्तियों में शिशु रूप में श्री हनुमान जी विद्यमान रहते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जी के कार्य करने को हनुमान जी अत्यन्त उत्सुक रहते हैं। श्री राम सुकरात वर्णित परोपकारी राजा थे, उन्हें अपनी सहायता के लिये किसी सचिव की आवश्यकता थी और इस कार्य के लिये श्री हनुमान जी का सृजन हुआ। श्री हनुमान श्री राम के ऐसे सहायक और दास थे और उनके प्रति इतने समर्पित थे कि कोई अन्य दास अपने स्वामी के प्रति नहीं हो सकता। उनके समर्पण के फलस्वरूप ही शारीरिक रूप से विकसित होने से पूर्व ही उन्हें नव-सिद्धियाँ प्राप्त हो गयीं। इन सिद्धियों के फलस्वरूप उनमें सूक्ष्म या पर्वतसम विशालकाय शरीर धारण करने की क्षमता प्राप्त हो गयी। अत्यन्त उग्र स्वभाव के व्यक्तियों को श्री हनुमान इन सिद्धियों से नियंत्रित करते हैं। जीवन में तीव्र गति से दौड़ते हुये व्यक्ति को आप किस प्रकार नियंत्रित करेंगे? श्री हनुमान जी ऐसे व्यक्ति का संचालन इस प्रकार करते हैं कि उसे अपनी गति धीमी करनी ही पड़ती है। वे ऐसे व्यक्ति के पैर या हाथ अत्यन्त भारी बना देते हैं जिससे कि वह

व्यक्ति अधिक कार्य न कर सके। दायीं ओर झुके उग्र व्यक्ति को वे अत्यन्त अधिक अकर्मण्य करने वाली तन्द्रा भी दे सकते हैं।

अपनी पूंछ को किसी भी हद तक बढ़ाकर लोगों को नियंत्रित करना उनकी एक ओर सिद्धि है। आप सब कहते हैं कि सभी बन्दर चालें उनमें हैं। वे हवा में उड़ सकते हैं और इतना विशाल रूप धारण कर सकते हैं कि उनके शरीर द्वारा स्थानांतरित हवा का भार उनके शरीर के भार से कहीं अधिक होता है। यह आर्कीमडीज के सिद्धान्त की तरह से है। वे इतने विशालकाय बन जाते हैं कि उनका शरीर नाव की तरह से हवा में तैरने लगता है। हवा में उड़ने की सामर्थ्य के कारण वे संदेश को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचा सकते हैं।

आकाश की सूक्ष्मता श्री हनुमान के नियंत्रण में है। वे इस सूक्ष्मता के स्वामी हैं और इसी के माध्यम से वे संदेश भेजते हैं। दूरदर्शन, आकाशवाणी तथा ध्वनिवर्धन उनकी इसी शक्ति की देन है। बिना किसी संयोजक के आकाश मार्ग से वायवीय (Etheric) सम्बन्ध स्थापित करना इस महान अभियन्ता (श्री हनुमान जी) का ही कार्य है। यह कार्य इतना पूर्ण है कि आप इसमें कोई त्रुटि नहीं निकाल सकते। आपके यंत्रों में त्रुटि हो सकती है, श्री हनुमान की कार्यकुशलता में नहीं। वैज्ञानिक जब इन चीजों की खोज करते हैं तो वे सोचते हैं कि ये प्रकृति में विद्यमान हैं परन्तु वे यह कभी नहीं सोचते कि ऐसा किस प्रकार हो सकता है। वे यह मानकर चलते हैं कि श्री हनुमान जी ने सारे तन्त्र की रचना करके उसके माध्यम से यह कार्य किया है। यहां तक कि हमारे अन्दर की सूक्ष्म लहरियों का हमारी नस नाड़ियों पर, हमारे रोम रोम पर अनुभव होना भी श्री हनुमान जी की कृपा से है।

श्री हनुमान को अणिमा नामक एक अन्य सिद्धि भी प्राप्त है जो उन्हें अणुओं तथा परमाणुओं में प्रवेश करने की शक्ति प्रदान करती है। बहुत से वैज्ञानिक सोचते हैं कि आधुनिक युग में ही उन्होंने अणु परमाणुओं की खोज की है परन्तु अणु परमाणुओं का वर्णन हमारे धर्मग्रन्थों में भी पाया जाता है। विद्युत-चुम्बकीय शक्तियों का कार्यरत होना श्री हनुमान जी की कृपा से ही होता है। श्री गणेश ने उनके अन्दर चुम्बकीय शक्ति भर दी है। वे स्वयं चुम्बक हैं। भौतिक सतह पर विद्युत चुम्बकीय शक्ति हनुमान जी की शक्ति है। परन्तु भौतिकता से वे मस्तिष्क तक जाते हैं। स्वाधिष्ठान से उठकर मस्तिष्क तक जाते हैं। मस्तिष्क के अन्दर वे इसके भिन्न पक्षों के सह सम्बन्धों का सृजन करते हैं। यदि श्री गणेश हमें विवेक प्रदान करते हैं तो श्री हनुमान हमें सोचने की शक्ति देते हैं।

बुरे विचारों से बचाने के लिये वे हमारी रक्षा करते हैं। श्री गणेश जी हमें विवेक देते हैं तो श्री हनुमान जी सद्सद् विवेक। बौद्धिकता के लिये सद्सद् विवेक आवश्यक नहीं क्योंकि आप बुद्धिमान हैं, आप जानते हैं क्या अच्छा है और क्या बुरा। परन्तु एक व्यक्तित्व को जब नियंत्रित करना हो तो सद्सद् विवेक आवश्यक है क्योंकि यह नियंत्रण हनुमान जी से आता है। मानव के अन्दर सद्सद् विवेक हनुमान जी ही हैं। सद्सद् विवेक उनकी दी हुई सूक्ष्म शक्ति है और यह हमें सत्य-असत्य, विवेक बुद्धि अर्थात सत्य असत्य में भेद जानने का विवेक प्रदान करती है। सहजयोग में हम कहते हैं कि श्री गणेश अध्यक्ष हैं या इस विश्वविद्यालय के कुलपति हैं। वे हमें उपाधियां देते हे। और हमें अपनी अवस्था की गहराई जानने में सहायता

करते हैं। वह हमें निर्विचार तथा निर्विकल्प समाधि और आनन्द प्रदान करते हैं। परन्तु बौद्धिक सूझबूझ जैसे "यह अच्छा है", "यह हमारे हित में है", श्री हनुमान जी की देन है और बुद्धिवादी होने के कारण वे पाश्चात्य लोगों के लिये बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि बौद्धिकता के बिना तो उनकी समझ में ही कुछ न आता। श्री हनुमान के बिना यदि आप सन्त बन भी जायें तो आप इस अवस्था का आनन्द तो प्राप्त कर लेंगे परन्तु यह नहीं समझ सकेंगे कि यह सन्तावस्था ठीक है या गलत, **आपका हिमालय पर रहना ठीक है या लोगों को साक्षात्कार देने के लिये जाना।** यह सब विवेक, मार्गदर्शन तथा सुरक्षा हमें श्री हनुमान जी की देन है। जर्मनी, क्योंकि दायें भाग का सार है अत: श्री हनुमान जी की पूजा द्वारा दायें भाग की सुरक्षा प्रदान करना यहाँ अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु इस सारी विवेक बुद्धि के बावजूद भी श्री हनुमान जी जानते हैं कि वे पूर्णत: श्री राम के आज्ञाकारी सेवक हैं। श्री राम कौन हैं? वे परोपकारी राजा हैं जो परोपकार के लिये कार्य करते हैं। स्वयं वे एक औपचारिक व्यक्ति हैं। अत्यन्त संतुलित पुरुष, श्री राम, स्वयं बहुत आगे नहीं बढ़ते। श्री हनुमान सदैव उनका कार्य करने के लिये उत्सुक रहते हैं। विवेक यह है कि जो कुछ भी श्री राम कहते हैं श्री हनुमान उसे कर देते हैं। गुरु शिष्य के सम्बंधों से भी बढ़कर यह सम्बंध है। शिष्य पूर्णतया ईश्वर के प्रति समर्पित तथा आज्ञापालन में दास सम है। दायें ओर के व्यक्ति प्राय: अपने स्वामी, नौकर या अपनी पत्नी के प्रति अत्यन्त समर्पित होते हैं। परन्तु विवेकहीनता की कमी के कारण वे गलत लोगों के दास होते हैं। श्री राम की सहायता जब आप लेते हैं तो वे आपको बताते हैं कि सर्वशक्तिमान परमात्मा या श्री राम जैसे गुरु के अतिरिक्त आपको किसी के प्रति समर्पित नहीं होना। तब आप एक स्वतंत्र पक्षी होते हैं और पूरी नौ शक्तियाँ आपके अन्दर जागृत हो जाती हैं।

आपके अहं के साथ साथ बहुत सी अन्य बुराईयों का श्री हनुमान प्रतिकार करते हैं। यह तथ्य लंका दहन कर रावण की खिल्ली उड़ाने में अत्यन्त मधुरता से प्रकट हो जाता है कि किस प्रकार वे लोगों का अहं समाप्त कर देते हैं। किसी भी अहंकारी का यदि मजाक उड़ाया जाये तो वह ठीक हो जाता है। जब रावण ने श्री हनुमान से पूछा "तुम केवल एक बन्दर क्यों हो" तो हनुमान जी ने अपनी पूंछ से उसकी नाक को गुदगुदा दिया। यदि कोई अहंकारी व्यक्ति आपको सताने का प्रयत्न करता है तो श्री हनुमान उसका ऐसा मजाक उड़ायेंगे कि आप आश्चर्यचकित उसकी अवस्था को देखकर दंग रह जायेंगे।

अहंकारी लोगों से आपकी रक्षा करना तथा सद्दाम हुसैन जैसे अहंकारी व्यक्तियों को नीचा दिखाकर आपकी रक्षा करना श्री हनुमान का कार्य है। इन मामले में हनुमान से कार्य करने के लिये कहा गया और अब किस तरह से उन्होंने सद्दाम को कठिनाइयों में डाल दिया है। उसकी समझ में नहीं आता कि वह क्या करे। यदि वह युद्ध को चुनता है तो पूरा इराक समाप्त हो जायेगा। वह स्वयं समाप्त हो जायेगा, कुवैत समाप्त हो जायेगा और पूरा पैट्रोल समाप्त होने के कारण सभी लोग कठिनाई में फँस जायेंगे। सद्दाम का क्या होगा? वह बचेगा ही नहीं क्योंकि यदि अमेरिकन लोगों को लड़ना पड़ा तो वे इराक के अन्दर जाकर लड़ेंगे। तो अब श्री हनुमान सद्दाम के मस्तिष्क में घुस कर बता रहे

हैं, "देखो तुमने ऐसा किया तो इसका परिणाम यह होगा"। सभी राजनीतिज्ञों तथा अहंकारी व्यक्तियों के मस्तिष्क में श्री हनुमान कार्य करते हैं और यही कारण है कि कभी कभी राजनीतिज्ञ अपनी नीतियाँ बदल देते हैं और अपना कार्य चलाते हैं। श्री हनुमान का एक अन्य गुण यह है कि वे लोगों को स्वेच्छाचारी बना देते हैं। दो अहंकारी व्यक्तियों को मिलवाकर वे उनसे ऐसे हालात पैदा करवा देते हैं कि दोनों नम्र होकर मित्र बन जाते हैं। हमारे अन्तस का हनुमान तत्व हमारे अहं का ध्यान रखने तथा हमें बाल-सुलभ, मधुर, विनोदशील और प्रसन्न बनाने में कार्यरत है। वे सदा नृत्य भाव में होते हैं। श्री राम के सम्मुख नतमस्तक हो श्री हनुमान सदा उनकी इच्छा को पूर्ण करना चाहते हैं। यदि श्री गणेश मेरे पीछे बैठते हैं तो श्री हनुमान मेरे चरणों में। यदि श्री हनुमान की तरह जर्मन लोग भी आज्ञाकारी हो जायें तो हमें कितनी गतिशील कार्यवाहिनी प्राप्त हो सकती है!

सीता द्वारा दिये गये हार में क्योंकि श्री राम न थे अतः श्री हनुमान ने वह हार न पहना। इसी घटना से उनके समर्पण का पता चलता है। श्री हनुमान जी का हर वक्त उनके इर्द गिर्द मंडराना सीता जी को अटपटा लगा। सीता जी ने उनसे कहा कि केवल एक कार्य के लिये वे वहाँ रुक सकते हैं। तो श्री हनुमान जी ने कहा कि जब जब श्री राम जी जमुहाई लेंगे तो चुटकी बजाने के लिये मैं उनके साथ रहूँगा। सीता जी ने उनसे छुटकारा पाने के लिये यह बात मान ली। फिर भी उन्हें वहाँ खड़ा देखकर जब सीता जी ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया,"मैं श्री राम के जमुहाई लेने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ" मैं यहां से कैसे जा सकता हूँ?

सहजयोग में मेरा सम्बंध एक गुरु तथा एक माँ का है। एक गुरु के नाते मेरी चिन्ता यह है कि आप सहजयोग का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें। सहजयोग विशेषज्ञ बनकर आप स्वयं के गुरु बनें। परन्तु इसके लिये पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है। पूर्ण समर्पित होकर ही आप सहजयोग को चलाना सीख सकते हैं। श्री हनुमान भी यह समर्पण करते हैं। अहंकारी लोग क्योंकि समर्पण नहीं करते, अतः श्री हनुमान जी उन्हें समर्पण सिखाते हैं अथवा समर्पण के लिये विवश करते हैं। किसी प्रकार की बाधाओं, चमत्कारों या विधियों द्वारा वे शिष्य का गुरु के प्रति समर्पण करवाते हैं।

गुरु के प्रति व्यक्ति का समर्पण करवाने की शक्ति श्री हनुमान जी की ही है। न केवल वे स्वयं समर्पित हैं, वे दूसरों को भी समर्पण करवाते हैं। अहं के कारण आप समर्पण नहीं कर सकते। अपनी अभिव्यक्ति में उन्होंने दर्शाया है कि दायें पक्ष का भी एक अति सुन्दर पहलू है। इसका पूर्ण आनन्द प्राप्त करने के लिये अपने गुरु के प्रति आपको दास की भांति समर्पित होना पड़ता है। बिना किसी संकोच के आपको गुरु के लिये सब कुछ करना होता है। निसंदेह गुरु का भी कर्त्तव्य है कि आपको आत्म साक्षात्कार दे अन्यथा वह गुरु नहीं है। किस तरह से आप गुरु को प्रसन्न कर सकते हैं और उसका सामीप्य प्राप्त कर सकते हैं? **सामीप्य का अर्थ शारीरिक सामीप्य नहीं, इसका अर्थ है एक प्रकार का तारतम्य, एक प्रकार की समझ। मुझसे दूर रहकर भी सहजयोगी अपने हृदय में मेरा अनुभव कर सकते हैं। यह शक्ति हमें श्री हनुमान जी से प्राप्त करनी है।** सभी देवताओं की रक्षा श्री हनुमान वैसे ही करते हैं जैसे वे आपकी रक्षा करते हैं। श्री गणेश शक्ति प्रदान करते हैं परन्तु रक्षा श्री हनुमान जी

करते हैं। जब श्री कृष्ण अर्जुन के सारथी बने तो श्री हनुमान जी ही रथ की पताका पर आरूढ़ थे, श्री गणेश नहीं। एक प्रकार से श्री राम स्वयं श्री कृष्ण बन जाते हैं, अतः श्री हनुमान जी को उनकी सेवा करनी ही होती है। जैसा कि आप जानते हैं श्री हनुमान देवदूत गैब्रियल थे। संदेश वाहक गैब्रीयल मारिया के संदेश लेकर आये और उन्होंने "इमैक्यूलेट साल्वे" अर्थात् "निर्मल साल्वे" शब्द का प्रयोग किया जो कि मेरा नाम है। जीवनपर्यन्त मारिया को श्री हनुमान की सेवा स्वीकार करनी पड़ी। मारिया महालक्ष्मी हैं, और सीता और राधा कौन हैं? हनुमान जी को उनकी सेवा के लिये वहाँ विद्यमान रहना पड़ा। कभी कभी लोग मुझ से प्रश्न करते हैं कि माँ आपको कैसे पता चला? माँ आपने कैसे संदेश भेजा? माँ आपने किस प्रकार यह कार्य कर दिया? यह श्री हनुमान का उत्तरदायित्व है। जो भी योजना मेरे मस्तिष्क में बनती है श्री हनुमान उन्हें कर डालते हैं क्योंकि पूरी संस्था भलीभांति संयोजित है। ये सभी संदेश आप लोगों को कहाँ से प्राप्त होते हैं? बहुत से लोग कहते हैं, "माँ मैंने बस आपकी प्रार्थना की"। एक व्यक्ति की माँ कैन्सर से मर रही थी। जब वह उससे मिलने गया तो नतमस्तक हो उसने प्रार्थना की, "श्री माता जी कृपया मेरी माँ को बचा लीजिये"। श्री हनुमान उस सहजयोगी की सच्चाई तथा गहनता को जानते हैं। उन्हें इस व्यक्ति के वजन का ज्ञान है। इसी कारणवश तीन दिन के अन्दर वह स्त्री ठीक होकर बम्बई लायी गयी और डाक्टर ने घोषणा की कि उसका कैन्सर ठीक हो चुका है। कई घटनायें जिन्हें आप चमत्कार कहते हैं, श्री हनुमान जी द्वारा की हुई होती हैं। चमत्कार करने वाले वे ही हैं। आप कितने बुद्धिहीन तथा मूर्ख हैं, यह दिखाने के लिये श्री हनुमान चमत्कार करते हैं। दायें भाग में होने के कारण वे अहं की ओर चले जाते हैं। अहं के कारण एक मानव निश्चित रूप से बुद्धिहीन हो जाता है। हनुमान जी को यह पसन्द नहीं। इस बुद्धिहीनता का विपरीत असर जब उन लोगों पर पड़ता है तो उन्हें अपनी मूर्खता का आभास होता है। परन्तु कभी कभी यूपीज रोग की तरह पुनः अवलोकन करना अत्यन्त कठिन कार्य हो सकता है क्योंकि श्री हनुमान ऐसे व्यक्तियों से विद्युत चुम्बकीय शक्ति वापिस ले चुके होते हैं तथा उनके चेतन मस्तिष्क से उनका संबंध समाप्त हो चुका होता है। फलस्वरूप उनका चेतन मस्तिष्क कार्य करना बन्द कर देता है। पूर्ण श्रद्धा से यदि ऐसे लोग श्री हनुमान जी की पूजा करें तभी संभवतः उन्हें बचाया जा सके। उदाहरणतया जाड़े के कारण यदि आपके शरीर पर चर्म रोग हो जाये तो उस पर गेरू मलने से आप ठीक हो सकते हैं। किसी बाधा के कारण हुये चर्म रोग को भी आप ठीक कर सकते हैं। दूसरी ओर श्री गणेश का शरीर सिंदूर से ढका हुआ होता है जिसका प्रभाव अत्यन्त शीतल है। उनके शरीर के अन्दर की गर्मी के प्रभाव को संतुलित करने के लिये वे ऐसा करते हैं। इसी कारण हम इसे सिन्दूर कहते हैं। लोग कहते हैं कि सिन्दूर कैन्सर का कारण बन सकता है परन्तु यह आपके अन्दर इतना शीतलीकरण कर सकता है कि आप बांयी ओर को झुक सकते हैं। कैन्सर एक मनोदैहिक रोग है और बहुत कम सम्भावना है कि सिन्दूर के अत्यधिक शीतलीकरण से आपका झुकाव बायीं ओर को हो जाये। आप ऐसे रोगाणुओं (वायरस) से ग्रस्त हो जायें कि आप इस रोग से ग्रस्त हो सकें। परन्तु अत्यन्त दायीं ओर झुके व्यक्तियों के लिये सिन्दूर लाभदायक है। उन्हें शान्त करने के लिये उनकी आज्ञा पर सिन्दूर लगाने से उनका

क्रोध कम हो जाता है और वे शान्त हो जाते हैं।

श्री हनुमान जी हमारी उतावली, जल्दबाजी तथा आक्रमणशीलता को ठीक करते हैं। उन्होंने हिटलर के साथ भी एक चालाकी की। हिटलर श्री गणेश को प्रतीक रूप में उपयोग कर रहा था अतः स्वस्तिक दक्षिणावर्त (सीधे चक्कर) होना चाहिये था। प्रयोग में आने वाले स्टैन्सिल को उलट कर श्री हनुमान ने स्वस्तिक को उल्टा करवा दिया। आदि-शक्ति ने उन्हें ऐसा करने की सलाह दी परन्तु चाल उन्होंने चली। स्वस्तिक के उल्टा होते ही श्री गणेश तथा श्री हनुमान दोनों ने हिटलर को विजय प्राप्त करने से रोक लिया। तो इस तरह की छोटी छोटी युक्तियाँ होती रहती हैं। एक बार मुझे याद है कि जर्मनी में मेरी पूजा रखी गयी। जर्मनी के लोगों को क्योंकि हनुमान जी की बहुत आवश्यकता है अतः वहाँ श्री हनुमान जी बहुत चालाकी करते हैं। पूजा के दिन गलतीवश स्वस्तिक उल्टा लगा दिया गया। प्रायः मैं इन चीजों को देख लेती हूँ परन्तु उस दिन ऐसा नहीं हुआ। मेरी दृष्टि बाद में जब उस उलटे स्वस्तिक पर पड़ी तो मेरे मुंह से निकला, "हे परमात्मा इस गलती का दुष्प्रभाव किस देश पर होने वाला है"?

श्री हनुमान मूसलाधार बारिश और वेगवान तूफान की तरह जाकर विनाश कर देते हैं। अपनी विद्युत चुम्बकीय शक्ति के द्वारा वे ये सारे कार्य करते हैं। भौतिक तत्व उनके नियंत्रण में है, वे वर्षा, धूप और हवा की रचना आपके लिये करते हैं। पूजा या मिलन के लिये वे उचित प्रबन्ध करते हैं। बिना किसी के जाने सुन्दरता से सारे कार्य वे कर डालते हैं। हमें हर समय उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिये। श्री हनुमान एक तेजस्वी देवदूत हैं। वे सन्यासी या त्यागी नहीं हैं। सुन्दरता तथा सज्जा उन्हें बहुत प्रिय है। उनके बहुत से भक्तों का विचार है कि वे ब्रह्मचारी हैं और कम वस्त्र धारण करते हैं। अतः वे नहीं चाहते कि स्त्रियां उनके दर्शन करें। परन्तु लोग ये नहीं जानते कि वे एक सनातन शिशु हैं और वो भी एक बन्दर-बालक। बन्दरों के लिये वस्त्र पहनना अनिवार्य नहीं। यद्यपि उनका शरीर विशालकाय है फिर भी आप उनका सुन्दर आकार ही देख पाते हैं। बड़े-बड़े नाखूनों के होते हुये भी वे मेरी चरण सेवा बड़ी कोमलता से करते हैं और अब मुझे लगता है कि श्री हनुमान की कृपा से जर्मन लोगों की कार्य प्रणाली भी अत्यन्त कोमल होती चली जा रही है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

सहजयोगियों के साथ समस्या ये है कि जो भी लोग सहजयोग के कार्यक्रम में आते हैं वो स्वयं को सहजयोगी समझने लगते हैं। वास्तव में ऐसा नहीं है।

(परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी)

Sahaja Yoga World Centres

Mr. Mohammaed Said Ait-Chaalal
27 Avenue Pasteur
Alger
Algeria
Telephone : (213) 64 8122
Work : (213) 64 9523

Mr. Mariano Martinez
Cuyo 937, Martinez
1640 Buenos Aires
Argentina
Tel/Fax : (541) 798-9378

Mr. & Mrs. Nikhil & Raani Varde
Palm Apts 11B, Palm Beach 6D
(Dutch Caribean)
Aruba
Telephon : (297) 839 662
Fax : (297) 839 253
E-Mail: nash@setrnet.aw

Mr. Michael Fogarty
20 Holly Street
Castle Cover NSW 2069
Australia
Tel/Fax : (612) 9417 5572
E-Mail : esis@tpgi./com.au (John Dobbie)

Dr. Engelbert Oman
Auhofstrabe 231/3/1
1130 Vienna
Austria
Telephone : (43-1) 877 7411

Dr. Wolfgang Hackl
Schobrunner Allee 113
2331 Vosendorf
Austria
Tel/Fax : (43-1) 609 1131
Cell telephone : (66-4) 422 5686
E-Mail: wolfganghackl@aon.at

Shri K.Madhusudan Pillai
C.C. 85, ALBA
Post Box 570
Bahrain
Telephone : (973) 702 148

Belarus
Minsk. Ul. Ijimskaya
Dom 1 kv 56
Korotky Oleg
Telephoen (70172) 62 68 27
Work : (70172) 6602 13

Mr. Roger Akigbe
B.P. 362, Porto-Novo
Benin
Tel/Fax : (229) 21-25-25

Mr. Bernard Cruvellier
Rue Piervenne 58
B 5590 Ciney
Belgium
Tel/Fax : (32 55) 428 265
E-Mail : cuv@skynet.be

Mr. Javier valderrama
Los Pinos Bloque 7 Apartamento 102
San Miguel. LaPaz
Bolivia
Telephone : (5912) 790 870
Fax : (5912) 391782

Mr. Edson Almeida
Cond. Rural Vivendas da Serra.
Modulo C, Casa 4
Rod. DF-150, km 2, 5 (Sobradinho Brasilia) DF 730 70-014
Brazil
Telephone : (55 61) 501-0834
Cell telephone : (5561) 983-9821
E-Mail : marino@if.ufrj.br

Mrs. Rosa Alexieva
Complex Hippodruma
Block 122, Entrance A, Floor 5
Sofia 1612
Bulgaria
Tel/Fax: (35 92) 599 360

Mr. Deniel Oyono
B.P. 11771 Yaounde
Cameroon
Telephone : (237) 2273 97 (Joseph Tsala)

Mr. Jay Chudasama
390 dixon Road # 612
etobicoke OT
Canada M9R 1T4
Telephone : (1-416) 614-7338
Fax : (1-416) 614-9521 (ashram)

Nadjilem Tolasde Moudjingar
c/o Ndoubalengar Mdgaou
S.A.C. N.P. 185
Ndjamena, Chad

Mr. Gerardo Bell
Valenzuela Puelma
7511-Casa C
Santiago
Chile
Telephone : (56-2) 758 5559
E-Mail: gbell@bdachile.cl

Mrs. Marie-Laure Cernay
Diag 110-Nr 19-15
Bogota, colombia
Tel/Fax : (571) 214-3971
E-Mail : norbert-klimt@south america.notes.pw.com

Mr. Michel Bikindou
33 rue Owando-Ouenze
Brazzaville
Congo
Mr. Radim Ryska
Koziskova 511
250 82 Uvaly
Czech Republic
Tel/Fax : (420 2) 997 23 10
Work : (420 2) 519 33 94
E-Mail : ryska@msmt.cz

Mr. Rasmus Heltberg
Hammelstrupvej 40, 2.tv
2450 Copenhagen SV
Denmark
Telephone : (45) 36 45 60 15
Work : (45) 32 32 44 00
E-Mail : rasmus.heltberg@econ.ku.dk

Alexei & Galina Kotlob
Rohu 109-14
EE-3600 Pdrnu, Estonia
Telephone : (372 44) 36 043

Mr. Raine Salo
Kuusikallionkuja 3B 27
02210 Espoo
Finland
Telephone : (3589) 855 0934
Fax : (3589) 621 4262
E-Mail : tuomas@cute.fi (Tuomas Kantelinen)

Majid Colpour
47 rue de Verneuil
75007 Paris
France
Telephone L (33-145) 483 373

Mr. Patrick Desire Akouma Nze
B.P. 146 Libreville
Gabon

Georgia
380094 Tbilisi
Ul. Sabutalo-Kutuzova kor 2, kv 13
Sandro Chubinidze
Telephone : (78832) 389524

Mr. Phillip Zeiss
Kastanienstrasse 19
D 14624 Dallgow
Germany
Telephone : (463322) 20 8870
Work : (4930 315 25 66
Fax : (49 3322 20 24 73
E-Mail: ganeshal1@cs.tu-berlin.de
(Karsten Radaiz)

Mr. Vaibhav Khopade & Thodoreos
Proussis-11
104-40 Athens
Greece
Tel/Fax : (30-1) 884 1489

Mr. Henno de Graaf
Varikstraat 1
1106 CT Amsterdam - Z.O.
Holland
Telephone : (31 20) 697-2038
Fax : (31 20) 697-5131
E-Mail:degraaf@euronet.nl

Mr. Alex Henshaw
Flat D, 6/F, Lei Shun Court
116 Leighton Rd.
Causeway Bay
Hong Kong
Telephone: (852 2) 504-5260
Work : (852 2) 504-4779
Fax : (852 2) 504-4965
E-Mail:pohl.gyorgy@emeryworld.com

Mr. Guoru Pohl
Lillom U. 27/A 111/8
H-1094 Buda Pest
Hungary
Telephone - (36-1) 21 80 493
Fax (36-1) 2200264
E-Mail-Pohl gyorgy @ emery world.com

Mr. V.J. Nalgirkar
Sahaj Yoga Temple
C-17, Qutub Institutional Area
Behind Qutub Hotel
N.Delhi-110016
91-011-6966652
Works - 91-011-6179420
Res - 91-011-6178156
Fax - 91/011-6866801

Prof. Dr. U.C. Rai
International Sahaja Yoga Research &
Health Centre
Polt 1, Sector 8, CBD
Navi Mumbai, India
Telephone : (91 22) 757 6922
Fax : (91 22) 757 6795

John and Gulshan Fisher
Kusumaatmaja
58 Menteng, Jakarta, Indonesia
Telephone : (62 21) 720 6613
Mobile : 0811 993 312

Mr. Oleg Kotilarsky
c/o Philippe Schemimann
30 A#3 Avoda St.
63821 Tel Aviv, Israel
Telephone : (972-3) 507 3911
E-Mail : Philips@well.com (Phillippe
Scheimann)

Mr. Guido Lanza
Vocabolo Albereto 10
02046 Magliano Sabina, Italy
Telephone : (39-744) 919-122
Fax : (39-744) 919-904
E-Mail : Nirmala@etr.it
Mr.Jean-Claude Laine
01 BP 2887
Bouake 01, Ivory Coast
Tel: Work : (255) 63 25 14
E-Mail : Amon@AfricaOnline.co.com
(Amon Ettien)

Mr. Philippe Carton
Himonya 6 chome 7-8
Megoru-ku
Tokyo 152, Japan
Tel/Fax : (81-3) 3760 4434
E-Mali : pcarton@softlab.co.jp

Kazakhstan
486 008 Chimkent
Ul. Gagarin 38-45
Bondarenko Dima
Telephone : (7 3252) 12 13 68

Didier Gauvin
French School of Nairobi
(College Diderot
P.O. Box 47525, Nairobi, Kenya
Telephone : (254 2) 56 62 59

Ms. Irina Solomenikova
Riga, Latvia
Telephone : (0132) 25 93 42

Gertruda Sargautiene
Staneviciaus 66-64
Vilnius 2029, Lithuania
Telephone : (37 02) 4781 43
E-Mail: jvkos@pub.osf.it (subj: "to Gertruda")

Goitchoo Stevkovski
Partenie Zografski 77A
91000 Skopje, Macedonia
Telephone : (389 91) 226275

Mr. Ivan Tan
17, Jalan 14/52
46100 Petalig Jaya
Selangor, Malaysia
Telephone : (603) 774 4750
Fax : (603) 718 7128
E-Mail : rbertan@pc.jaring.my

Garciela Vazquez-Diaz
Tejocotes 56-201
Col. del Valle
Mexico D.F. 03100, Mexico
Tel/Fax: (525) 575 1949
E-Mail : indoamci@rtn.net.mx

Mr. Peter Koretzki
Maracesti Str. 13/1
chisinau, Moldova
Telephone : (373-2) 73 0212
Fax : (373-2) 73 86 69

Mr. Herbert Wiehart
Gourmet Vienna
Chha 1-705
Thamel. Kathmandu
Nepal
Tel/Fax: (977 1) 415488

Mr. Geoff Platford
24 Pukenui Road
Epsom, Auckland
New Zealand
Telephone : (64-9) 624 1788
Fax : (64-9) 625 8888
E-Mail : sahaj-nz@ihug.co.nz

Sidzel Mugford
Myrlia 31
1453 Bjornemyr, Norway
Tel/Fax : (47) 66 9156 08
E-Mail : mugford@online.no

Melise Rodriguez
Calle Louis Pasteur 1271
San Isidro, Lima Peru
Telephone : (51-14) 227315

Dr. Rajiv Kumar
29 V Madrigal Street, Corrinthian Gardens
Quezon City 1100, Metro Manila
Philippines
Telephone : (632) 633 5633
Fax : (632) 632 2381
Work : (632) 632 5709
E-Mail : rkumar@mail.asiandevbank.org

Mr. Tomaxz Kornacki
ul. Baczynskiego 20 m.17
05-092 Lomianki/nr.Warsaw/
Poland
Tel/Fax : (48 22) 7513520
Catarina de Castro Freire
R. Garcia de Orta, 70-1'C
Lisboa-1200, Portugal
Telephone : (351-1) 396 3149
Christian Fontaine
58, Grand Fond Exterieur
97414 Entre Deux Reunion
Tel/Fax : (262) 39 62 32
E-Mail tgauvin@guetali

Mr. Dan Costian
Str. Constantin Nacu No. 8
70219 Bucharest Romania
Telephone : (40-1) 313-58-82
Fax : (40-1) 211-57-87
E-Mail : dcostian@syrom.sfos.ro

Russia
119146 Moscow
Ul. 1 Frunzenskaya 6, kv 5
Dr. Valentina Gosteeva
Telephone : (7 095) 245 25 50
E-Mail : union@sahaja.msk.su (collective)

Mr. Aziz Gueye
S/c de Serigue M'Baya Gueye
Direction CFAO-BP 2631
Dakar
Senegal

Mr. Eric Sopholas
Belonie, Mahe
Seychelles
Telephone : (248) 24 400 ext. 545

Mr. Patrick B. Sheriff
c/o Sierra Rutile Limited
P.O. Box 59
Freetown
Sierra Leone
Telephone : (232) 25316
Telex : 3259

Mr. Dave Dunphy
437 Tanjong Katong Road, Apt. 24-02
Kings Mansion
Singapore 437147
Telephone (65) 348 0690
Fax : (65) 348 2317

Mr. Jozef Sjuria
Znievska 7
Slovakia
Telephone : (4217) 832 316
or : (421 7) 531 5493
E-Mail L trans-eu@internet.sk

Mr. Dusan Rados
Volceva 6
SLO-1360 Vrhnika
Slovenia
Telephone : (386) 61 755369
E-Mail : Bostjan.Troha@fmf.uni-ij-si

Dr. Siva Govender
P.O. Box 729
Laxmi 3207
Natal. South Africa
Telephone : (27-331) 424484
Fax : (27-331) 424484
Fax : (27-331) 425685
E-Mail:/G=Deena/S-Govender/OU-1751PMFS/0=TMZA.UNI/
@LANGATE.gb.sprint.com

Mr. Eduardo Marino
Rua Aperana, 99 Ap. 201
22450-190 Rio de janeiro RJ Brazil
South America
Telephone (55-21) 274-1753
Fax : (55-21) 239-2705
E-Mail: marino@if.ufrj.br

Mr. Jose-Antonio Salgado
Santa Virgilia 16
28033 Madrid, Spain
Telephone : (34-1) 7643767
Fax : (34-1) 564 4457

Mr. Rolt Carlsson
Valhallanvagen 18
S-11422 Stockholm, Sweden
Telephone : (46-8) 16 77 17
E-Mail :
rolf.carlsson@stockholm.mail.telia.com

Mr. Arneau de Kabermatten
2 bis, Chemin Sous-Voie
1295 Mies, Switzerland
Tele/Fax : (41 22) 779 20 37

Mr. Wen-Cheng Liu
2F, No 13, Alley 3 Lane 106
Sec 3, Ming Chuan East Rd.
Sung-Shan District
Taipei Cit. Taiwan (R.O.C.)
Tel. : hom : (8862) 715 5208

Mr. Pascal Streshthaputra
84 Sukhumvit Soi 40
Bangkok 10110, Thailand
Telephone : (66 2) 712 1418
Fax : (662) 391 2373
or : (662) 382 1109
E-Mail : pascal@loxinfo.co.th

Mrs. Clarie Skinner
Cumana Postel Agency
Cumana Via Toco, Toco
Trinidad

Tunisia
c/o Mr. Youcef Brahimi
Roggegasse 40
1210 Wien, Austria
Telephone : (431) 2929 956

Mrs. Nese Algan
Atiye Sok Ak Apt. No. 7/7
Tesvikiye-Istanbul, Turkey
Telephone : (90) 212 248 3122
Work : (90) 212 241 3487
Fax (90) 212231 3524
E-Mail : Nirmala@doruk.net.tr

Ukraine
252 190, Kyiv - 190
Vul. Estoska, 5, kv. 80
Galina Sabirova
Telephone : (380 44) 442 6871
Fax : (380 44) 412 9806
E-Mail: dobro@ipp.adam.kiev.ua

Pravin Saxena
Sharjah
United Arab Emirates
Telephone : (9716) 519012
Fax : (9716) 518894
Work : (97167) 571797
Mobile : 050-631 3504
E-Mail:pharmuae@emirates.net.ae

Mr. Derek Lee
c/o 44 Chelsham Road
London, England SW4 6NP
United Kingdom
Telephone : (44 1223) 420 855
Fax : (44 1223) 423 278
E-Mail :
ealing@dircon.co.uk(attention:Derek Lee)

Mr. Manoj Kumar
270 Overpeck Avenue
Ridgefield Park NJ 07660-1239
USA
Telephone : (1-201) 384-5034
Fax : (1-201) 384-0820
E-Mail: manoj-kumar@merck.com

Adriana Anon
Calle pedro Vidal 2217
Montvideo, Uruguay CP11600
Telephone : (59 82) 481 8781
E-Mail : anona@adinet.com.uy

Mrs. Rani Lavu
P.O. Box 50180
Lusaka, Zambia
Telephone : (260) 1 291 378
Cell telephone : (260) 757 550

वर्ष 1999 में गणेश पूजा के अवसर पर हरिद्वार केन्द्र में श्री माताजी की फोटोग्राफ से खींची हुई तस्वीर में, परम चैतन्य चार हृदयाकार कुण्डलों में।